* ॐ *

* सत्य बोलने से जय *

श्री बद्री-केदार यात्रा

[यमनोत्री-गंगोत्री-केदारनाथ-बद्रीनाथ
और सत्यपथ यात्रा का वर्णन]

लेखक और प्रकाशकः—

रायबहादुर पं० श्रीदत्त शर्मा, (वैद्यराज)

अवैतनिक सहकारी मन्त्री,

श्री १०८ बाबा काली कमली वाला पंचायती क्षेत्र,

ऋषिकेश, (देहरादून)

ज्येष्ट सं० २००८ वि० मई, सन १९५१

प्रति २०००] [बिना मूल्य वितरण

प्रकाशक:—

पं० श्रीदत्त शर्मा (रायबहादुर)

अवैतनिक सहकारी मन्त्री,

क्षेत्र बाबा काली कमली वाला;

ऋषिकेश (जिला देहरादून) उ० प्र०

२००० प्रति — मई सन १९५१ — ज्येष्ठ, सं० २००८ विक्रमी

मुद्रक:—

विज्ञान प्रेस;

ऋषिकेश, (जिला देहरादून) उ० प्र०

श्री बद्रीनाथ जी की स्तुति

पवन मन्द सुगन्ध शीतल, हेम मन्दिर शोभितम् ।
निकट गंगा बहत निर्मल, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥
शेष सुमिरन करत निशिदिन, धरत ध्यान महेश्वरम् ।
श्री वेद ब्रह्मा करत स्तुति, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥
शक्ति-गौरी गणेश शारद नारद मुनि उच्चारणम् ।
योगी ध्यान अपार लीला, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥
इन्द्र चन्द्र कुबेर दिनकर, धूप दीप प्रकाशितम् ।
सिद्ध मुनिजन करत जय जय श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥
यक्ष किन्नर करत कौतुक, ज्ञान गन्धर्व प्रकाशितम् ।
श्रीलक्ष्मी कमला चँवर डोले, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥
बदरी बदरीत्येव विशालोऽप्यति यो वदेत् ।
तस्य विघ्ना विनश्यन्ति सफलास्तु मनोरथाः ॥

विषय-सूची

—·—※—·—

प्राक्-कथन

यों तो हिन्दुओं में ही नहीं वरन संसार भर की सभी प्रसिद्ध जातियों में तीर्थ यात्रा की प्रथा है, परन्तु अन्य जातियों के सभी तीर्थ किसी न किसी विशेष घटना के स्मारक हैं एवं हिन्दू जाति के अन्य तीर्थ भी प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ २ कुछ घटनाओं को भी सूचित करने वाले हैं। किन्तु उत्तराखंड में 'बद्रिकाश्रम' भारतवर्ष के चार धामों में से एक परम पुनीत प्राचीन धाम है। यह धाम भारतवर्ष का ही नहीं वरन सारे भूलोक का शिरमौर है। यह स्थान दिव्य-प्राकृतिक सौन्दर्यमय, वैज्ञानिक तत्त्वमय सर्व-गुण-सम्पन्न होने से अनादि काल से ही स्वाभाविक तपोभूमि है। प्राचीन ऋषि-महर्षि तथा पुराणाचार्यों ने तो इसे साक्षात भूवैकुण्ठ ही गाया है।

यह पवित्र भूमि प्राचीन काल से ही ऋषि, महर्षि, साधु, महात्मा, देव-देवाङ्गनाओं से सेवित रही है। यहां शुभ्र हिमालय की ऊंची २ चोटियों से गिरते हुए मनोहर झरने हरी हरी

(आषाढ़ और भाद्रपद की) घास पर खिले हुए रंग बिरंग के पुष्पों की सुन्दर शोभा, शुद्ध जल वायु, दिव्य कन्दरायें आदि आदि सभी दर्शनीय और मनोरञ्जक हैं।

वैकुण्ठ निवासी श्री १०८ बाबा काली कमली वाले जब सं० १९४१ में उत्तराखंड की यात्रा को पधारे थे उस समय श्री बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमनोत्री के रास्ते का यह हाल था कि बहुत खर्च करने वाले यात्री को भी ठहरने के लिए जगह और भोजन के लिए अन्न नहीं मिलता था। अभ्यागतों की अवस्था क्या होती होगी? इस कारण इस यात्रा का फल बहुत कम लोग उठा सकते थे।

इस कष्ट की निवृत्ति के लिए वैकुण्ठ निवासी बाबा काली कमली वाले महाराजने ऋषिकेश में बैठ कर धर्मात्मा पुरुषों को इस मार्ग में जगह २ धर्मशाला, सदावर्त, आदि खुलवाने का उपदेश किया ताकि यात्री और अभ्यागतों को आराम मिले और धर्मात्मा पुरुषों का धन भी शुभ कार्य में खर्च हो। जिस समय सम्वत् १९५३ माघ शु० १५ में काली कमली वाले महाराज का वैकुण्ठ वास हुआ उस समय आपके सामने यात्रा लाइन में ६ सदावर्त थे। कोप भी मामूली ही था और क्षेत्र का काम भी एक छोटे से रूप में था।

उनके बाद बाबा रामनाथ जी ने, जो कि वैकुण्ठ वासी बाबा जी के सामने भी क्षेत्र का कार्य सम्पादन करते रहते थे, कार्यभार

सम्भाला और ईश्वर की कृपा, बाबा जी की आत्मिक शक्ति के बल तथा सज्जन श्रीमानों की सहायता से आपने क्षेत्र के कार्य और कोष को विशाल रूप से बढ़ाते हुए क्षेत्र को एक स्थाई, लोक-प्रिय संस्था के रूप में परिणत कर दिया।

सम्वत् १९८७ वि० फाल्गुन वदी ३ को बाबा रामनाथ जी का स्वर्गवास हो गया। उसके बाद बाबा मणिराम जी ने क्षेत्र के कार्य को सम्भाला और सुचारु रूप से क्षेत्र का संचालन किया और बड़ी दूरदर्शिता और बुद्धिमत्ता से काम लेकर कार्य करते हुए भविष्य में क्षेत्र के कार्य संचालन के लिए ५० प्रतिष्ठित व्यक्तियों को सम्मिलित कर एक ट्रस्ट रजिस्टर्ड करा दिया। इस ट्रस्ट में हाई कोर्ट के जज, वकील, बैरिस्टर तथा सन्यासी महात्मा, विद्वान तथा सेठ साहूकार भारतवर्ष के सब प्रान्तों से प्रतिनिधि रूप से लिए गए हैं। ट्रस्ट कमेटी का हैड आफिस कलकत्ता में है और वर्तमान में इस ट्रस्ट कमेटी के प्रेसीडैंट सेठ मदनगोपाल पोद्दार एटर्नी-एटला 115/A, Chitranjan Avenue कलकत्ता, हैं। सभापति महोदय बड़ी तत्परता और सेवा भाव से क्षेत्र का कार्य संचालन कर रहे हैं। सेठ माणिकलाल जी सर्राफ मंत्रित्त्व का कार्य सम्पादन कर रहे हैं। क्षेत्र दिन प्रति-दिन लोक सेवा में अधिक से अधिक भाग ले रहा है।

इस समय क्षेत्र की तरफ से ५७ स्थानों में सदावर्त जारी हैं। ८ औषधालय, ८५ धर्मशालायें हैं, ४२ प्याऊ, ३ गौशाला ३ पाठशालायें, १ आयुर्वेदिक कालेज और १ औषधि निर्माण-

शाला, पुस्तकालय तथा वाचनालय हैं और यात्रियों की हर प्रकार की सुविधा का प्रबन्ध ऋषिकेश से लेकर गंगोत्री जमनोत्री तक, तथा बद्रीनाथ केदारनाथ तक है। बनारस-प्रयाग-कनखल-कुरुक्षेत्र-सत्यनारायण-रामनगर।

उत्तर काशी, गंगोत्री, केदारनाथ जी और बद्रीनाथ जी में अन्नक्षेत्र हैं जहां पर बना बनाया भोजन वितरण किया जाता है।

निवेदकः—

श्रीदत्त शर्मा (रायबहादुर)

अवैतनिक स० मन्त्री,

क्षेत्र बा० का० क० वाला ऋषिकेश (जि० देहरादून)

श्री १०८ स्वामी विशुद्धानन्द जी महाराज



संस्थापक :—

बाबा काली कमली वाला पंचायत क्षेत्र,

ऋषिकेश, (देहरादून) यू० पी०

विज्ञान प्रेस, ऋषिकेश।

* श्री बद्री-केदार यात्रा *

श्री हरिः ।

॥ मंगलाचरण ॥

यो विश्वात्मा विधिज विषयान् प्राश्य भोगान् स्थविष्ठान्,
पश्चाच्चायान् स्वमति विभवान् ज्योतिषा स्वेन सूक्ष्मान् ।
सर्वानेतान् पुनरपि शनैः स्वात्मनि स्थापयित्वा,
हित्वा सर्वान् विशेषान् विगत गुणगणः पात्वसौनस्तुरीयः ॥

यों तो हिन्दुओं में ही नहीं वरन संसार भर की सभी प्रसिद्ध जातियों में तीर्थ यात्रा की प्रथा है, परन्तु अन्य जातियों के सभी तीर्थ किसी न किसी विशेष घटना के स्मारक हैं एवं हिन्दु जाति के अन्य तीर्थ भी प्राकृतिक सौंदर्य के साथ २ कुछ घटनाओं को भी सचित करने वाले हैं किन्त उत्तराखण्ड में "बद्रिकाश्रम"

भारतवर्ष के चार धामों में से एक परम पुनीत प्राचीन धाम है। यह धाम केवल भारतवर्ष का ही नहीं वरन सारे भूलोक का सिरमौर है। यह स्थान दिव्य प्राकृतिक सौन्दर्यमय, वैज्ञानिक तत्त्वमय सर्वगुण सम्पन्न होने से अनादि काल से ही स्वाभाविक तपोभूमि है। प्राचीन ऋषि महर्षि तथा पुराणाचार्यों ने तो इसे साक्षात् "भू-वैकुण्ठ" ही गाया है।

यह पवित्र भूमि प्राचीन काल से ही ऋषि, महर्षि, साधु, महात्मा, देव-देवाङ्गनाओं से सेवित रही है। यहां के शुभ्र हिमालय की ऊँची २ चोटियों से गिरते हुए मनोहर झरने हरी हरी (आषाढ़ और भाद्रपद की) घास पर खिले हुए रंग बिरंग के पुष्पों की सुन्दर शोभा, शुद्ध और स्वच्छ जल-वायु (Climate), दिव्य कन्दरायें आदि सभी दर्शनीय और मनोरञ्जक हैं।

बैकुण्ठ निवासी श्री १०८ बाबा काली कमली वाले श्री स्वामी विशुद्धानन्द जी महाराज जब सं० १६४१ में उत्तराखण्ड की यात्रा को पधारे थे उस समय श्री बद्रीनाथ, केदारनाथ, गङ्गोत्री, यमनोत्री के रास्ते का यह हाल था कि बहुत खर्च करने वाले यात्री को भी ठहरने के लिये जगह और भोजन के लिये अन्न नहीं मिलता था। अभ्यागतों की व्यवस्था क्या होती होगी? इस कारण इस यात्रा का लाभ बहुत कम लोग उठा सकते थे।

इस कष्ट की निवृत्ति के लिए बैकुण्ठ निवासी श्री बाबा काली कमली वाले महाराज ने ऋषिकेश में बैठ कर धर्मात्मा

पुरुषों को इस मार्ग में जगह जगह धर्मशाला, सदावर्त आदि खुलवाने का उपदेश किया ताकि यात्री और अभ्यागतों को आराम मिले और सभी का कल्याण हो। इसलिए श्री स्वामी विशुद्धानन्द जी महाराज कलकत्ते गए और उन्होंने धनी-मारवाड़ियों के दरवाजे खटखटाए। बहुत से लोगों ने कहा कि कहां पहाड़ों पर धर्मशाला बन सकती है, कहां प्रबन्ध हो सकता है? यह काम दान करने पर भी महान् कठिन है।" कोई भी इस कार्य के चल जाने का विश्वास नहीं करता था, किन्तु महात्माओं की सत्यपरायणता, तपश्चर्या और दृढ़ता का फल अद्भुत होता है। उसी का परिणाम है कि उत्तराखंड में स्थान २ पर धर्मशालायें, सदावर्त और प्याऊ चल रहे हैं।

श्री विशुद्धानन्द जी महराज का वैकुण्ठवास माघ शु० १५ सम्वत् १९५३ विक्रमी में हुआ।

उनके बाद बाबा रामनाथ जी ने, जो कि वैकुण्ठ वासी बाबा जी के सामने भी क्षेत्र का कार्य सम्पादन करते रहते थे, कार्य भार सम्भाला और ईश्वर की कृपा, बाबा जी की आत्मिक शक्ति के बल तथा सज्जन श्रीमानों की सहायता से आप ने क्षेत्र के कार्य और कोष को विशाल रूप से बढ़ाते हुए क्षेत्र को एक स्थायी लोक प्रिय संस्था (Popular Institution) के रूप में परिणत कर दिया। सम्वत् १९८२ विक्रमी फाल्गुन बदी ३ को बाबा रामनाथ जी का स्वर्गवास हो गया। उसके बाद बाबा मनीराम जी ने क्षेत्र के कार्य को सम्भाला और सुचारू रूप से

क्षेत्र का संचालन किया और बड़ी दूरदर्शिता तथा बुद्धिमत्ता से काम लेकर कार्य करते हुए भविष्य में क्षेत्र के कार्य के संचालन के लिए पचास प्रतिष्ठित व्यक्तियों को सम्मिलित कर एक ट्रस्ट रजिस्टर्ड करा दिया। इस ट्रस्ट में देश के बड़े २ प्रतिष्ठित महानुभाव सम्मिलित हैं जैसे:—आनरेबल श्री रामाप्रसाद मुखर्जी जज हाई कोर्ट बंगाल, डा० राधाकुमुद मुखर्जी श्रीमान् सेठ मदन गोपाल जी पोद्दार, एटर्नी-एट-ला, श्रीमान सेठ दीपचन्द जी पोद्दार, श्रीमान सेठ आनन्दीलाल जी पोद्दार, श्रीमान सेठ ईश्वरदास जी जालान, (स्पीकर बंगाल एसम्बली), श्रीमान सेठ किशनलाल जी पोद्दार, श्रीमान सेठ गोवर्धनदास जी सर्राफ, सेठ माणिकलाल जी सर्राफ, श्रीमान सेठ मंगतूराम जी जैपुरिया, श्रीमान सेठ बैजनाथ जी जालान, श्रीमान सेठ ईश्वरीप्रसाद जी गोयनका, श्रीमान सेठ सर पद्मपत जी सिंघाणिया, कानपुर, राय बहादुर सेठ गूजर मल जी मोदी (मोदी नगर) रायसाहिब श्री सेठ पन्नालाल जी भल्ला (हरिद्वार) श्रीमान सेठ किरोड़ीमल जी लुहारी वाला (कलकत्ता) श्रीमान सेठ रामरिखदासजी परसराम पुरिया, (बम्बई), श्रीमान सेठ मौजीराम जी (देहली), सेठ दौलतराम रावतमल जी नौपाणी (कलकत्ता), रायसाहिब ला० राधाकृष्ण जी आलमाल, रा० ब० रामदेव जी चौखाणी, सेठ रामकृष्ण जी धानुका, श्री दामोदरदास जी खन्ना, आदि आदि बहुत से गण्य मान्य व्यक्ति हैं जो कार्य में बड़ा सहयोग दे रहे हैं। इस ट्रस्ट कमेटी का प्रधान कार्यालय (Head office) ११५—ए, चितरंजन एवेन्यु, कलकत्ता

में है। इस समय क्षेत्र की तरफ से ५७ स्थानों में सदाव्रत जारी हैं, आठ औषधालय, ८५ धर्मशालायें, ४२ प्याऊ, तीन गौशालायें संस्कृत पाठशाला, आयुर्वेदिक कालेज, अनाथालय (Orphanage) औषधनिर्माण शाला (Ayurvedic pharmacy) पुस्तकालय तथा वाचनालय (Library) चालू हैं और यात्रियों की हर प्रकार की सुविधा का प्रबन्ध ऋषिकेश से लेकर गंगोत्री जमनोत्री तथा बद्रीनाथ केदारनाथ जाने वाले यात्रियों के लिए होता है।

आत्मविज्ञान भवन की विशाल योजना

लगभग २०० वर्षों की अंग्रेजों की गुलामी का भारतवर्ष पर यह प्रभाव पड़ा कि उसने हिन्दुओं को अपनी प्राचीन भारतीय सभ्यता, संस्कृति तथा वेशभूषा के प्रति उदासीन बना दिया। हम अब स्वतन्त्र हो चुके हैं। अतः वर्तमान समय में भारतीय संस्कृति, शिक्षा तथा प्राप्त स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए यत्न करना आवश्यक है। इसी उद्देश्य को लेकर क्षेत्र की ओर से "आत्म विज्ञान भवन" की योजना तैयार की गई है।

१—ऋषिकेश से दो मील हरिद्वार-ऋषिकेश मोटर रोड पर बाबा काली कमली वाले के रामनगर बागीचा में गङ्गा जी के किनारे उच्च कोटि के साधुओं के लिए कुटियायें बनाई गई हैं।

२—दूसरी ओर संसार के कार्यों से उपराम (Retired) होकर वानप्रस्थी जीवन व्यतीत करने वालों के लिए स्थान बनवाए गए हैं दानी लोग अपने दान से स्थान बनवा रहे हैं।

इसमें सेठ राधाकिशन जी चमड़िया तथा सेठ रतनलाल जी चमड़िया का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

३—ऊँचे से ऊँचे दर्जे के आदमियों के लिये गंगा सेवन और सत्संग के योग्य कुछ धनी लोग अच्छे ढंग के भवन भी बनवा रहे हैं।

४—इसी प्रकार जो गृहस्थी सत्संग के लिए आवें उनके लिए भी स्थान बनवाए गए हैं।

५—योगाभ्यासियों के लिए श्री गंगा जी के किनारे गुफाओं के ढंग के स्थान बनाये गए हैं।

६—एक बहुत बड़ा सत्संग भवन जिसमें ३—४ हजार के लगभग आदमी बैठ करके सत्संग, कथा, कीर्तन, उपदेश सुन सकेंगे बन कर तैयार होगया है।

७—श्री गंगा जी के किनारे श्री रघुनाथ जी का मन्दिर उपासकों के लिए बन कर तैयार हो गया है।

भावी योजना

१—एक बहुत बड़ा पुस्तकालय बनेगा जिस में सब प्रकार की धार्मिक पुस्तकों का संग्रह होगा।

२—प्राकृतिक चिकित्सालय (Naturopathic Hospital) बनेगा जिसमें सब प्रकार के रोगों की चिकित्सा "प्राकृतिक चिकित्सा" प्रणाली से अर्थात् मिट्टी, जल, सूर्य-रश्मि और वायु द्वारा की जायेगी।

३—आयुर्वेदिक चिकित्सालय तथा आतुरालय (Indoor Patient Hospital) भी बनेगा।

४—**संस्कृत विद्यालय**—जिसमें वेद वेदांगों की शिक्षा का प्रबन्ध रहेगा।

५—**आयुर्वेद विद्यालय**—जिसमें अर्वाचीन तथा प्राचीन प्रणाली के अनुसार विद्यार्थियों को शल्य-शालाक्य (Surgeory) की समुचित शिक्षा दी जाया करेगी।

६—एक विशाल मन्दिर जिसमें सब धर्मों की शिक्षा का समन्वय होगा।

७—गंगोत्री, यमनोत्री के प्राकृतिक दृश्यों (Natural Scenes) का दर्शन।

८—**सुन्दर उद्यान**—यात्रियों तथा सत्संगी लोगों के लिए एक सुन्दर उद्यान बनाया जायेगा। जिसमें भ्रमण करने से स्वर्ग के नन्दन बन का आनन्द प्राप्त होगा।

आत्म विज्ञान भवन के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए बाबा काली कमली वाला पंचायत क्षेत्र ऋषिकेष के प्रधान कार्यालय से तत्सम्बन्धी आवश्यक साहित्य (Literature) मंगाकर अवलोकन करें। तथा रा० ब० पं० श्रीदत्त जी जो इस योजना के जन्मदाता हैं और क्षेत्र के सहकारी मन्त्री हैं—उनसे पत्र-व्यवहार करें।

श्री बद्री केदारनाथ यात्रा

यह मार्ग अब उतना कठिन नहीं है जितना कि यह ५० वर्ष पहिले था अब सरकार ने इस मार्ग में पुलिस-स्टेशन, तार-घर, डाक घर, अस्पताल, गश्ती शफ़ाखाने (Touring hospitals) सड़कें और निरीक्षणालय (Inspection-Houses) बनवा दिए हैं और बीमारी, सफाई तथा दुकानों के निरीक्षण के लिए यात्रा काल में स्वास्थ्य अधिकारी (Health officer) तथा सफाई निरीक्षकों (Sanitary Inspectors) को भी नियुक्त कर दिया है। और बाबा काली कमली क्षेत्र की तरफ़ से यात्रियों की सुविधा के लिए हर प्रकार का प्रबन्ध है।

आजकल ऋषीकेश से देवप्रयाग होकर कीर्तिनगर तक मोटर जाती है। कीर्ती नगर से ३ मील पैदल रास्ता तय करके श्रीनगर पहुँचते हैं। श्री नगर से चमोली (लालसांगा) तक मोटर का मार्ग है। चमोली से ४८ मील बद्रीनाथ है यह मार्ग घोड़ा, खच्चर, डण्डी, द्वारा या पैदल (On Foot) तय करना पड़ता है।

जो यात्री श्री केदारनाथ जी की यात्रा करने जाते हैं उनको श्रीनगर से आगे रुद्रप्रयाग तक मोटर में और उस से आगे केदारनाथ तक घोड़ा, खच्चर, डण्डी, कंडी या पैदल सफर करना होता है। श्री केदारनाथ के लिए रुद्र-प्रयाग से दूसरा

रास्ता फटता है जो अगस्त मुनि, गुप्त काशी होता हुआ केदार-नाथ जी पहुँच जाता है।

जो यात्री कोटद्वार से सीधे मोटर द्वारा बद्रीनाथ जाते हैं वह कोटद्वार से मोटर में सवार होकर चमोली (लाल सांगा) पहुंच जाते हैं। वहां से ४८ मील बद्रीनाथ जी का पैदल रास्ता है। और जो यात्री केदारनाथ तथा बद्रीनाथ (दोनों धामों) की यात्रा करना चाहते हैं वह मार्ग में रुद्रप्रयाग में उतर जाते हैं रुद्रप्रयाग से केदारनाथ जी का ४८ मील पैदल रास्ता है।

भिन्न २ स्थानों की दूरी

ऋषिकेश से सीधे बद्रीनाथ (देवप्रयाग होकर)	१६८	मील	है।
,, ,, ,, केदारनाथ ,, ,,	१६४	मील	है।
,, ,, ,, यमनोत्री (टिहरी होकर)	१३१	मील	है।
,, ,, ,, यमनोत्री (देवप्रयाग होकर)	१५१	मील	है।
यमनोत्री से गंगोत्री	६६	मील	है।
गंगोत्री से केदारनाथ	१२०	मील	है।
केदारनाथ से बद्रीनाथ	१०२	मील	है।

नोटः—ऋषिकेश से धरासू तक मोटर चलती है। और धरासू से यमनोत्री ४८ मील है। यह पैदल का रास्ता है। और धरासू से १८ मील उत्तरकाशी है। ऋषिकेश से उत्तरकाशी १०० मील है। यमनोत्री की यात्रा करके वापस गंगाणी चट्टी जो यमनोत्तरी से २५ मील के फासले पर है वापस आना होता

हैं। और वहां से उत्तरकाशी १८ मील है उत्तरकाशी होकर गंगोत्तरी का रास्ता है। उत्तरकाशी से गंगोत्तरी ५६ मील है। और गंगोत्तरी की यात्रा करके यात्री वापस भटवाड़ी चट्टी आते हैं वहां से कोई २ मील के फासले पर मल्ला चट्टी से केदारनाथ जी का रास्ता फटता है वहां से केदारनाथ जी ८५ मील हैं।

यात्रा के नियम

संयम—हिंसा नहीं करना और किसी के चित्त को न दुखाना. सच बोलना. चोरी न करना, ब्रह्मचर्य से रहना, दान नहीं लेना, किसी का अन्न नहीं खाना, चारपाई पर या किसी के बिस्तर पर न सोना, जहां तक बन पड़े भोजन दोनों समय अपने हाथ से बना कर खाना, ऐसे पदार्थ जो रजोगुण और तमोगुण वर्धक हों (अथवा जो धार्मिक दृष्टि से बर्जित हों) उनको न खाना अर्थात् तीर्थ पर पहुँच कर पहली रात्रि को उपवास करना, प्रत्येक तीर्थ जब तक तीर्थ कृत्य न निभाया जाय तब तक भोजन न करना इत्यादि।

नियमाः—शौचसन्तोष तपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः।

अर्थात् पवित्रता पूर्वक रहना, नित्य शान्त चित्त से सन्तोष पूर्वक रहना, कुछ ईश्वर भजन, पाठ पूजा या जप करते रहना। ईश्वर या ईश्वर की कल्पित (मानी हुई) मूर्ति में दृढ़ विश्वास तथा पूर्ण श्रद्धा रखना। बड़े प्रातः काल उठकर शौचादि क्रिया

से निवृत्त होकर सन्ध्योपासनादि कर्म कर पाठ पूजा करना, यदि तीर्थ हो तो "तीर्थ कर्म" करे।

आवश्यक बातें

१—**जोखम तथा रुपया पैसा**—यात्रियों को चाहिये कि धर्मशालाओं की कोठरियों में भी साधारण सामान कपड़ा, बिस्तर के अलावा रुपया पैसा तथा जोखम (गहना आदि) को नहीं छोड़ना चाहिये। अपने साथ रखना चाहिए या अपना कोई निजी आदमी सामान के पास छोड़ कर जाना चाहिये। और यह भी ध्यान रहे कि बिना जान पहिचान के दुकानदार के सिवाय किसी के हाथ से पानी, पान, सिगरेट आदि नहीं लेना चाहिए। मन्दिरों के सिवाय राह चलता प्रसाद भी किसी के हाथ से नहीं लेना चाहिये ताकि कोई वेषधारी उठाईगीर धोखा न दे।

२—**कब्ज:**—यात्रा में बासी भोजन नहीं करना चाहिए उससे कब्ज होकर आम (आंव) की शिकायत पैदा हो जाती है। और बाबा काली कमली वाले की "जल लाग की औषधि" ऋषिकेश से ले जानी चाहिए।

३—**गंगाजल**—चलते चलते एकदम गंगाजल नहीं पीना चाहिए। १० मिनट ठहर कर तथा गंगाजल को भी ठहरा कर पीना चाहिए ताकि पसीना सूख जाय और गंगाजल की रेत भी पात्र में नीचे बैठ जाय।

४—जेब कटे; चोर, उठाईगीरों से बचो वह देश से ही यात्रियों के साथ हो लेते हैं और घाट बाट पर मौका पाकर सामान तथा रुपया पैसा उठा ले जाते हैं। इतनी तकलीफ पहुँचा देते हैं कि यात्रियों को अपने घर लौटना भी कठिन हो जाता है।

५—भोजन हल्का सादा और गरम २ करना चाहिए।

६—**फल:**—आम, आडू आदि कच्चे तथा अधिक पके हुए फल नहीं खाने चाहिएं

७—**कपड़ा:**—ओढ़ने, बिछाने तथा पहिनने के लिए पूरे गरम वस्त्र साथ ले जाने चाहियें। श्री बाबा जी महाराज के क्षेत्र की ओर से भी अपनी धर्मशालाओं में टिकने वाले यात्रियों को ओढ़ने बिछाने का कपड़ा बद्रीनाथ लाइन में पांडुकेश्वर तथा पुरी बद्रीनाथ में मिलता है और केदारनाथ लाइन में गुप्तकाशी से १२ मील आगे रामपुर चट्टी में पुरी केदारनाथ तक के लिये मिलता है जो कि वापसी में चट्टी पर दे देना चाहिये और पुरी केदारनाथ में भी अपनी धर्मशाला में टिकने वाले यात्रियों को भी कपड़ा दिया जाता है।

८—**जूता**—हल्का और मजबूत होना चाहिये।

९—**स्नान:**—सुबह को या स्थान पर पहुँच कर कुछ देर ठहर कर करना चाहिये।

१०—**मक्खियां**—केदारनाथ की तरफ एक प्रकार की ज़हरीली मक्खियां होती हैं जिनके काटने से पहले खुजली फिर शरीर की प्रकृति के अनुसार फोड़े तथा घाव भी हो हो जाते हैं।

११—यात्रियों को चाहिए कि वे दुकानदार तथा धर्मशाला वालों से साफ वर्तन लें और साफ करके दें।

१२—बीमार कौन होते हैं? जो कि खाने पीने की परवाह न करके बहुत चलते हैं, या बासी गरिष्ठ और दुकान की पकी हुई चीजें खाते हैं, या गुड़, चना, सत्तू खाकर चलते हैं, या जो ठंड में भी ठंडे जल में अधिक देर तक स्नान करते हैं और देर तक नंगे रहते हैं अथवा जो ऊपर बताये हुये नियमों का उल्लंघन करते हैं।

१३—**परिणाम**—उक्त सिद्धान्तों पर ध्यान न देने से निम्नलिखित बीमारियों की होने की सम्भावना है। साधारण तथा खूनी पेचिश (Dysentry), आँव, पेट दर्द, विशूचिका (Cholera), बुखार, सिर दर्द (Headache) और Hill Diarrihia इत्यादि।

१४—**खर्च**—यों तो अपनी शक्ति के अनुसार प्रत्येक आदमी का खाने पीने का ढंग अलग २ होता है। कोई उत्तम भोजन करता तो कोई बहुत साधारण। किन्तु आम तौर पर साधारण भोजन का खर्चा इस यात्रा में प्रत्येक आदमी

के लिए रोजना १।।) डेढ़ रुपया से दो रुपया तक लगता है। कुली बोझे का किराया आम तौर पर ३ तीन रुपये से चार रुपए सेर हिसाब से लेते हैं। किन्तु यात्रा की कमी बेशी के अनुसार कम और बेशी भी ले सकते हैं। कुलियों को मजदूरी के अलावा दो पैसा रोज चने चबाने के लिये दिए जाते हैं। और हर एक तीर्थ पर खिचड़ी खाने को दी जाती है। एवं जिस दिन यात्री अपनी इच्छा से तथा किसी कारणवश मुकाम करेगा उस दिन का खाना भी कुली का यात्री को ही देना पड़ता है। और यदि दो तीन दिन से बेशी, शर्त के अलावा, कहीं रुकना पड़े तो उतने दिनों की बेशी मजदूरी भी यात्री को देनी पड़ती है। पहाड़ी घोड़े का भाड़ा ।।।) से १) फी मील के हिसाब से पड़ता है किन्तु कोशिश करने पर भी आम तौर पर मिलता नहीं। कण्डो, तो कुलियों के अपने ही रहते हैं परन्तु डण्डी की सवारी वालों को डन्डी की कीमत अलग देनी पड़ती है या यात्री को स्वयं खरीद करनी पड़ती है।

कण्डी को एक कुली ले जाता है परन्तु यात्री को कष्ट बहुत होता है। डण्डी को चार कुली ले जाते हैं। डन्डी में आराम रहता है और चार के बजाय ६ कुली लेकर चलना चाहिए ताकि रास्ते में आराम रहे और जल्दी पहुंचा जाय।

१५—डण्डी का भाड़ा—ऋषिकेश से केदारनाथ जी बद्रीनाथ जी होकर वापसी श्रीनगर तक ३००) से लेकर

५००) तक होता है। और चारों धामों (यमनोत्तरी, गंगोत्तरी, केदारनाथ और बद्रीनाथ) का ११००) ग्यारह सौ तक रुपये है।

१६—सामान—खाने पीने का सामान साथ में ले जाने की कोई जरूरत नहीं क्योंकि सभी चट्टी पर दुकानें रहती हैं। जहां कि सामग्री मिल सकती हैं। सिर्फ मेवा, मिश्री, इलायची, चटनी का सामान, इमली, अनारदाना आदि अवश्य साथ में ले जाना चाहिए। ओढ़ने बिछाने के लिए दो कम्बल, लोई और दो चादर काफ़ी हैं, यमनोत्तरी, गंगोत्तरी, केदार और बद्रीनाथ आदि ऊँचे स्थानों के सिवाय बाकी सारा रास्ता गरम ही है। पहिनने के लिए दो तीन सूट ठंडे गरम कपड़े के ले जाने चाहिए ताकि वर्षा व धूप के समय यथोचित काम में आ सकें। छाता, बरसाती, लाठी (चढ़ाई उतार पर मदद देने के लिए) और भोजन बनाने के लिये मामूली बर्तन और एक लालटेन साथ ले जाने से जहां चाहे वहां टिक सकते हैं।

१७—गरीब यात्री मामूली वस्त्रों के साथ केवल ७५) या १००) रुपये में ही बद्रीनाथ यात्रा कर सकता है।

१८—भाव (Rates)—यात्रा की कमी बेशी के हिसाब से चट्टियों के दुकानदार मनमाना भाव कर लेते हैं सुबह को कुछ भाव है तो शाम को कुछ है इसलिये निश्चित रूप से कुछ नहीं लिखा जा सकता। आम तौर पर घी, अरहर

तथा मूंग की दाल और बढ़िया चावल मंहगे बिकते हैं क्योंकि बद्रीनाथ आदि स्थानों में माल ३०) मन भाड़ा के हिसाब से पहुंचता है। कन्ट्रोल के कारण अन्न तथा अन्य सामान के मिलने में कठिनाई है।

१८—सवारी–'मुनि-की-रेती' (ऋषिकेश) से देवप्रयाग-कीर्तिनगर तक सब प्रकार की सवारी का प्रबन्ध होता है। यहीं पर यात्रियों के आराम के लिए कुली एजेन्सी नियुक्त है जिसमें कि कुलियों को पहिचानने वाले टन्डैल रहते हैं और कुलियों की रजिस्टरी भी की जाती है।

नोट:—स्वयं किसी कुली का प्रबन्ध नहीं करना चाहिए और एक मन से ज्यादह बोझ नहीं देना चाहिये क्योंकि पीछे मार्ग में दुःख देते हैं प्रतिदिन १०—१५ मील से अधिक नहीं चलना चाहिए १० बजे से पहले २ और शाम को ३ बजे के बाद चलना चाहिये।

पट खुलने के समय

श्री बद्रीनाथ जी के पट अक्षय तीज को नहीं खुलते हैं किन्तु सदा बैसाख २५ प्रविष्टा से ३० प्रविष्टा)के अन्दर २ ही खुला करते है अर्थात १५ मई के दो चार दिन आगे पीछे खुलते हैं और दीपमाला तक खुले रहते हैं।

श्री केदारनाथ जी के पट बैसाख १८ प्रविष्टा के अन्दर २ खुला करते हैं एवन् यमनोत्री, गंगोत्री के पट भी बैसाख १५ प्रविष्टा से पहले खुल जाते हैं।

ऋषिकेश से श्री बद्रीनाथ जी की यात्रा को जाने का उचित समय

(क)—यमनोत्री, गंगोत्री और केदार होकर जाने के लिए बैसाख शुरू से लेकर आषाढ़ के आखीर तक है।

(ख)—केवल केदारनाथ होकर बद्रीनाथ जाने के लिए बैसाख आरम्भ से श्रावण आखीर तक है।

(ग)—सीधे बद्रीनाथ जाने के लिए बैसाख प्रविष्ठा १० से जन्माष्टमी तक है।

इस समय जाने से यात्रियों को मार्ग में कहीं भी बर्फ नहीं मिलेगा। किन्तु ध्यान रहे कि ज्येष्ठ और आषाढ़ में जाना सबसे अच्छा है।

इसके पश्चात वर्षा आरम्भ हो जाने से यात्रा में बड़ी असुविधा और कष्ट होता है किन्तु कुछ यात्री सितम्बर और अक्टूबर में भी यात्रा करते हैं।

॥ श्रीः ॥

सत्य बोलने से जय !!
श्री बद्रीशो विजयतेतराम्
श्री बद्री केदार यात्रा

हरिद्वार—यह ईस्ट इण्डियन रेलवे का स्टेशन है। यहीं से यात्रा का आरम्भ होता है। यह एक महान पावन तीर्थ है। हरकी-पौड़ी स्नान का मुख्य स्थान है। कुशावर्त, नीलधारा, बिल्वकेश्वर, चण्डी का मन्दिर, कनखल में दक्ष प्रजापति का मन्दिर भीमगोडा, सप्तसरोवर आदि सब तीर्थों की यात्रा करनी चाहिये। यहां से ऋषीकेश १५ मील है। ऋषिकेश जाने के दो रास्ते हैं एक पैदल तांगा तथा मोटर की पक्की सड़क का और दूसरा रेल द्वारा। रेल का किराया हरिद्वार से ऋषिकेश तक ॥≈) आने हैं।

भीमगोडा—हरिद्वार से एक मील। यहां भीमसैन ने गोडा टिकाया था इस वास्ते इस का नाम भीमगोडा पड़ा है।

परदूनी—भीमगोडा से तीन मील परदूनी धर्मशाला है। यहां श्रीमान बहादुरमल हरगोविन्द भिवानी निवासी की धर्मशाला और कुवां बना हुआ है। लागत ३०००) रुपया (हरिपुर इलाका परदूनी में) श्रीमान सेठ नत्थीमल जी दीवान की धर्मशाला और कूवाँ जो अब खंडहर हो गए हैं। परदूनी में बाबा

जी के पंचायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओर से यात्रा के समय एक प्याऊ रहती है। मोतीचूर में भी क्षेत्र की धर्मशाला और कूवां है।

रायवाला—परदनी से तीन मील। यह रेल का स्टेशन है। यहां नाथूराम रामकिशन खेमका रतनगढ़ निवासी की धर्म-शाला है जिसमें आज से ३० वर्ष पूर्व लागत ४०००) चार हजार रुपया लगा था और श्रीमान हरसहायमल सुखदेवदास पोद्दार खुर्जा निवासी का कूंवा है। जिसमें लागत दो हजार रुपया लगा है और बाबा जी के पंचायती क्षेत्र, ऋषिकेश की ओर से प्याऊ बारह महीने रहती है आगे आध मील पर सूसवा नदी का पुल है जिसके पास ही बाबा जी की गोशाला और थोड़ी जमीन का हिस्सा मौजा गोहरी में है।

सत्यनारायण—रायवाला से १॥ मील। यहां सत्य-नारायण जी का मन्दिर है। जिसमें २०००) दो हजार रुपए श्रीमान सन्तलाल सिन्धी अमृतसर वाले की माता श्रीमती करमोंबाई की ओर से लगे हैं। ३००० तीन हजार रुपये क्षेत्र के लगे हैं। इसी माई करमोंबाई की बेटी श्रीमती नैनों बाई की ओर से ११०० ग्यारह सौ रुपये लागत का कूवां बना है। श्रीमान राजा ललिताप्रसाद हरिप्रसाद पीलीभीत वालों की धर्मशाला है। लागत २५ सौ रुपया, श्रीमान् सेठ खेमराज श्री कृष्णदास श्री वेंकटेश्वर स्टीम प्रेसाध्यक्ष बम्बई वालों ने धर्मशाला के वास्ते ५०००) पांच हजार रुपए दिए हैं। श्रीमान सेठ रामचन्द्र

तुलाराम गोयन्दका खुर्जा वाले की धर्मशाला लागत ३०००) तीन हजार रुपया, श्रीमान नाथूराम पोद्दार बिसाऊ वाले की धर्मपत्नी ने यात्रियों की रसोई के लिए मकान बनवाया है। लागत १०००) एक हजार रुपया सत्यनारायण की रसोई का मकान पञ्चायती क्षेत्र से बना, लागत ६७५) रु०, लाला गौरीशंकर जगरावां वाले की धर्मपत्नी माई किशनदेई की ओर से १०००) एक हजार रुपये की धर्मशाला है। प्याऊ बाबा जी के पंचायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओर से और सदावर्त श्रीमान् सेठ हनुमानदास जी सूरजमल जी मोहता मुकाम कलकत्ता वालों की ओर से तथा एक मूर्ति का सदावर्त स्वर्गीय सेठ मोहनलाल वल्द मूलचन्द जी ब्राह्मण ट्रस्ट लश्कर (मध्य भारत की ओर से लगता है और श्रीमान सेठ चन्दूलाल जी हरिलाल जी अहमदाबाद वालों की ओर से महात्माओं को छौंके हुए चने दिये जाते हैं।

सेठ बहादुरमल हरगोविन्द जी भिवानी वालों की धर्मशाला लागत २५००) रु० और धर्मशाला श्रीमान् श्यामलाल मोतीलाल मूलचन्द हाथरस निवासी की ओर से लागत ८००) रु०। हैद्राबाद(दक्षिण) निवासी श्रीमान सेठ रामलाल रामनाथ जी भाटी की ओर से ३ दुकानें और एक प्याऊ का स्थान ७८२६) रु० की लागत से सम्वत २००७ में बना है।

बीबी वाला:—सत्यनारायण से २॥ मील बीबी वाला है। यह धर्मशाला श्रीमान् जवाहरमल जयनारायण मित्री चूरू वाले ने बनवाई, लागत ६५०), कूप श्रीमान् खूबचन्द कन्हैयालाल

कनखल निवासी ने बनवाया, लागत ८००) रु०, प्याऊ पंचायती क्षेत्र की ओर से यात्रा समय लगा करती है।

दूधूपानी—बीबीवाला से १ मील दूधूपानी है। यहां धर्मशाला और कूप श्रीमान् शिवनारायण रामनारायण बोरा का लागत एक हज़ार रुपया से बना है और प्याऊ भी यात्रा समय पंचायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओर से लगती है यहां बाबा जी की गौशाला भी है।

रामनगर गंगाद्वार:—दूधुपानी धर्मशाला से १ मील पर सरकार ने ६६२ एकड़ जमीन बाबाजी के क्षेत्र के नाम मन्जूर की है इसमें से २०० एकड़ ज़मीन मिल गई है। यहां पर आत्म विज्ञान भवन की योजना के अनुसार साधु महात्माओं, वानप्रस्थियों तथा सद्गृहस्थियों के निवास तथा ईश्वर भजन स्मरण के लिये अनेक गुफायें, कुटियायें, सत्संग भवन, श्रीरघुनाथ मन्दिर, श्री जगद्गुरु शंकराचार्य निवास आदि अनेक सुन्दर स्थान बनाये गये हैं। यह स्थान श्री गंगा जी के बिल्कुल किनारे पर है। यहां पर श्री बाबा रामनाथ जी काली कमली वालों की बहुत सुन्दर समाधि बनी हुई है और उसके समीप ही एक धर्मशाला श्रीमती मुनिया बाई जी फर्म सेठ हरिबक्स जी गोपीराम भगत कलकत्ता वालों की ओर से बनी हुई है।

ऋषिकेश—रामनगर गंगाद्वार से दो मील पर ऋषिकेश महा उत्तम तीर्थ और तपोभूमि है। यहां स्नानादि दानादि करने का

विशेष फल है। यहां का प्रयागराज से भी अधिक महात्म्य है और पिण्ड दान करने का बहुत फल है। एक रात्रि को निवास करने से अनन्य पुण्य के भागी बनते हैं। यहां पर प्राचीन स्थान भरत जी का मन्दिर है। ऋषिकेश तपोवन की जमीन इस मन्दिर अर्थात भरत जी महाराज के नाम साधु सन्त तथा गौओं के निमित्त महाराज टिहरी नरेश की ओर में माफी है। साधु महात्मा ऋषिकेश में बहुत रहते हैं। और भजन ध्यान करते हैं यहां पर बाबा काली कमली वाले बैकुण्ठ निवासी का पंचायत क्षेत्र है। अब इसकी मुन्तजिम ट्रस्ट कमेटी है परन्तु चिट्ठी पत्री व कारोबार में बाबा काली कमली वाले ही लिखा जाता है। इस में सेठ साहूकार और धर्मात्मा पुरुषों की तरफ से बहुत से मकान बने हुए हैं जिनसे यात्रियों को हर तरह से आराम मिलता है और सज्जनों के नाम के पत्थर लगे हुए हैं। अक्सर यात्री महाशय इसी क्षेत्र में ठहरा करते हैं। यहां पर बाबा काली कमली वाले का अन्न क्षेत्र बारहों महीने खुला रहता है जिसमें हमेशा परम हंस को बना हुआ भोजन और सदावर्त लेने वालों आटा दाल कन्ट्रोल रेट से, घी एक तोला, नमक, मिर्च, लकड़ी ऽ१ एक रोज, व पन्द्रह दिन के लिए भी कन्ट्रोल रेट से दिया जाता है और मसाला वगैरह दियासलाई, तेल और गेरू आदि जिन चीजों की साधु व विद्यार्थियों को जरूरत होती है यथोचित प्रबन्धानुसार दी जाती हैं। रोगी साधुओं को दुग्ध भी दिया जाता है। विद्यार्थियों को भोजन मिलता है। रोगियों को औषधि और यथायोग्य पथ्य भी दिया जाता है इस काम के

लिए क्षेत्र के औषधालय और वैद्य हैं। यहां पर एक संस्कृत पाठशाला तथा पुस्तकालय और वाचनालय, आयुर्वेद विद्यालय, अनाथालय तथा बानप्रस्थ आश्रम भी हैं। इस क्षेत्र की ओर भी बहुत सी धर्मशालायें और सदावर्त तथा कई औषधालय, बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री यमनोत्री लाइन में है जिनका हाल इस पुस्तक में यथा स्थान लिखा है। ऋषिकेश में इस क्षेत्र के अलावा और भी कई क्षेत्र और धर्मशालायें कई सज्जन श्रीमानों की बनाई हुई हैं। अक्सर धर्मात्मा पुरुष माघ के महीने में ऋषिकेश वास करके भजन, पूजन और पुण्य कर्म करते हैं। क्षेत्र के दोनों दरवाजों पर बारहों महीने प्याऊ रहती है और बाबाजी के पंचायती क्षेत्र से यात्रा में जाने वाले यात्रियों को जल लाग की दवाई मुफ्त दी जाती है जो बैकुण्ठवासी बाबाजी काली कमली वाले की अद्भुत औषधि है। यात्रियों को यह औषधि अवश्य अपने साथ ले जानी चाहिये।

ऋषिकेश से मुनिकीरेती १॥ मील है। यहां पर कैलास आश्रम बड़ा मनोहर और दर्शनीय स्थान है। यहां से एक मोटर की सड़क नरेन्द्रनगर होती हुई टिहरी को जाती है और दूसरी लक्ष्मणझूला होती हुई देवप्रयाग को जाती है। यही सड़क श्री बद्रीनाथ जी को जाती है।

मुनिकीरेती से लक्ष्मणझूला १॥ मील है। मुनिकीरेती से चल कर स्वामी शिवानन्द जी का आश्रम आता है जो बहुत सुन्दर स्थान है। यहां से नौका द्वारा गंगा जी पार करके स्वर्गा-

श्रम, गीता भवन देखने के लिए यात्री लोग जाते हैं। लक्ष्मणझूला में गंगा जी के ऊपर एक लोहे और सीमेंट का पक्का झूले का पुल बना हुआ है। यहां पर लक्ष्मण जी का मन्दिर है तथा अन्य भी कई मन्दिर बने हुए हैं। बाबा काली कमली वाला पंचायत क्षेत्र की धर्मशाला गंगा जी के बिल्कुल तट पर बनी हुई है।

बद्रीनाथ जाने वाले यात्री ऋषिकेश से मोटर में सवार होकर सीधे देवप्रयाग पहुंचते हैं और जो यात्री पैदल यात्रा करके यात्रा का वास्तविक आनन्द और पुण्य लाभ उठाना चाहते हैं वह निम्नलिखित चट्टियों में होते हुए देवप्रयाग पहुंच जाते हैं। इन सब चट्टियों में काली कमली क्षेत्र की धर्मशालायें बनी हुई हैं:—

लक्ष्मणझूले से गरुड़चट्टी	२	मील।
गरुड़चट्टी से फूलवाड़ी—	२	मील।
फूलवाड़ी से गूलरचट्टी—	२	मील।
गूलरचट्टी से महादेवसैण—	२	मील।
महादेवसैण से नाई मोहन—	१	मील।
नाई मोहन से बड़ी बिजनी—	३	मील।
बड़ी बिजनी से कुण्ड—	३	मील।
कुण्ड से बन्दर भेल—	३	मील।
बन्दर भेल से महादेव—	३	मील।
महादेव चट्टी से सेमल चट्टी—	४	मील।

सेमल चट्टी से काण्डी—	३	मील।
काण्डी से व्यास घाट—	४	मील।
व्यास घाट से छालुड़ी चट्टी—	३	मील।
छालुड़ी चट्टी से उमरासू—	२	मील।
उमरासू से सौड़चट्टी	२	मील।
सौड़ चट्टी से देवप्रयाग—	२	मील।

देवप्रयाग में भागीरथी और अलकनन्दा का संगम है। रघुनाथ जी का मन्दिर है। धर्मशाला श्रीमान मनसुखराय मांगीलाल नवलगढ़ वालों की लागत (१२००) रुपया और श्रीमान शिवदत्त सांवल की लागत ६०६) रुपया जो अब टूट कर पञ्चायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओर से मरम्मत की गई है और श्रीमान हरिबख्श गोबर्धन दास की लागत ५००) रुपया और भी कई धर्मशाला हैं जिसमें रुपया पञ्चायती क्षेत्र से लगा है। धर्मशाला श्रीमान मोहनलाल शिवचन्द राव बहल वाले की मारफ़त माई जगतारिणी बंगालिन की बनी है। धर्मशाला में वट की छाया है और घाट पंचायती हींगन घाट वालों की ओर से मारफत जीवराज पोद्दार और बाहर में घाट जयनारायण सीताराम सिंघाणिया की लागत २००) का था जो बह गया है, और अलकनन्दा पार धर्मशाला श्रीमान हरमुखराय जानकीदास बागले भिवानी वालों की लागत १ एक हज़ार रुपया इसकी मरम्मत अब पञ्चायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओर से की गई है। घाट भी इन्हीं का है परन्तु मरम्मत तलब है सब टूटा फूटा है

और सदावर्त गंगोत्तरी जाने वाले साधुओं को श्रीमान तुलाराम जी गौरीशङ्कर खुर्जा निवासी की तरफ से आटा ݀१।, दाल ݀।, घी १ तोला नमक मिर्च और बद्रीनाथ जाने वालों को श्रीमान सूरजमल जी लछमनदास खुर्जा वालों की ओर से आटा ݀॥= दाल ݀= घी १ तोला और नमक मिर्च दिया जाता है। पार में धर्मशाला बेमरम्मत थी। पंचायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओर से मरम्मत कर दी गई है। यात्रा के समय अलकनन्दा के वार पार दोनों जगह पंचायती क्षेत्र की ओर से प्याऊ भी लगा करती है।

यहां से एक लाइन यमनोत्तरी, गंगोत्तरी को होकर जाती है और दूसरी सीधे बद्रीनाथ को। यहां से टिहरी ३४ मील है। मार्ग में धर्मशाला बनाने का विचार है। इस मार्ग का वर्णन आगे चल कर करेंगे। अभी सीधे बद्रीनाथ जी को चल रहे हैं। देवप्रयाग में यात्री लोग पितृ श्राद्ध करते हैं।

देवप्रयाग से कीर्तिनगर १८ मील। देवप्रयाग से मोटर में सवार होकर यात्री लोग कीर्तिनगर पहुँच जाते हैं। कीर्तिनगर से भागीरथी का पुल पैदल या घोड़े, खच्चर, कण्डी, डण्डी द्वारा पार कर के श्रीनगर पहुँचते हैं। कीर्तिनगर से श्रीनगर ३-मील है।

पैदल चलने वाले यात्री देवप्रयाग से चल कर निम्नलिखित चट्टियों से होते हुए श्रीनगर पहुँचते हैं:—

देवप्रयाग से रानीबाग—	८॥	मील।

रानीबाग से रामपुर—	३॥	मील।
रामपुर से अरकरणी—	३	मील।
अरकरणी से बिल्वकेदार—	७	मील।
बिल्वकेदार से श्रीनगर—	३	मील।

श्रीनगर में श्री बाबा काला कमली वाला पंचायत क्षेत्र की एक बहुत बड़ी धर्मशाला है जिसमें हजारों यात्री आराम के साथ ठहर सकते हैं। यह धर्मशाला श्रीमान मोहनलाल हीरानन्द जी सर्राफ ने २००००) रु० की लागत से बनवाई है। यहां आपका सदावर्त भी लगता है आटा ऽ॥≈ दाल ऽ= घी १ तोला व लकड़ो दी जाती है। गंगा जी का किनारा है। धर्मशाला की शोभा गंगा जी के कारण बहुत है, धर्मशाला के अन्दर एक नल लगा हुआ है और सत्यनारायण जी का मन्दिर भी उक्त श्रीमान जी की ओर से नया बना है।

यहां एक सरकारी हाई स्कूल, हस्पताल, डाकखाना, तार-घर है और अच्छा खासा बाजार है। नजीबाबाद से रेल द्वारा कोटद्वार, और वहां से मोटर द्वारा श्री बद्रीनाथ जी जाने वाले यात्री श्रीनगर होकर ही जाते हैं। कोटद्वार से पौड़ी होती हुई सीधी सड़क श्रीनगर आती है।

श्रीनगर से रुद्रप्रयाग—१८ मील है। श्रीनगर से मोटर में सवार होकर यात्री रुद्रप्रयाग पहुँचते हैं। श्रीनगर से पैदल यात्रा करने वाले यात्री निम्नलिखित चट्टियों से होते हुए रुद्र-प्रयाग पहुंचते हैं:-

श्रीनगर से सुकता:—	५	मील।
सुकता से भट्टू सेरा:—	३॥	मील।
भट्टीसेरा से खांकरा:—	५	मील।
खांकरा से नरकोटा:-	२॥	मील।
नरकोटा से गुलाबराय:—	२॥	मील।
गुलाबराय से रुद्रप्रयाग:—	१॥	मील।

रुद्रप्रयाग में मन्दाकिनी और अलकनन्दा का संगम (Confluence) है। यहां पर श्रीमान राय बहादुर हजारीमल जी दूधवे वाले कलकत्ता निवासी की ओर से एक घाट (१२000) रु० की लागत से बना हैं। अलकनन्दा का पुल पार कर जाना चाहिए। चट्टी में जल की धारा श्रीमान वेगराजजी बिमेसरलालजी की है। लागत २००) रु० लगा है। धर्मशाला श्रीमान सेठ मोहनलाल जी चिरञ्जीलाल बागला हाथरस निवासी की लागत १0000) रु० की है और सदावर्त बाबा काली कमली क्षेत्र की ओर से लगता है।

यहां डाकखाना तारघर भी हैं यहां से एक रास्ता सीधा बद्रीनाथ जी को जाता है और दूसरा केदारनाथ जी को। यात्रीगण धर्म मर्यादा अनुसार मन्दाकिनी के किनारे २ पहले केदारनाथ को जाते हैं। ऋषिकेश से रुद्रप्रयाग ८४ मील है और रुद्रप्रयाग से केदारनाथ ४८ मील है। रुद्रप्रयाग से आगे बीस मील तक रास्ता सीधा है रुद्रप्रयाग में एक धर्मशाला श्रीमान सेठ गट्टूभाई हरिलाल जी अहमदाबाद वालों की ओर से २१२८॥) की लागत से बनी है।

छतौली—रुद्रप्रयाग से ५ मील। झरने का जल पास है। छतोली से १॥ मील पर मठ चट्टी है। स्थान अच्छा है।

रामपुर (छोटा)—मठ से १ मील है। स्थान अच्छा है।

अगस्तमुनि—रामपुर से ४॥ मील है। यहां अगस्तमुनि का मन्दिर है, मैदान अच्छा है। गंगा जी दूर हैं। नल सेठ नेताराम रामबक्स जी केडिया की ओर से लागत १६००) का लगा है।

एक धर्मशाला सेठ गुर्द्दाराम मंगतराम अमृतसर निवासी की सदाव्रत श्रीमान सेठ हीरालाल जी मुरारीलाल गोटे वाले देहली निवासी की तरफ से आटा आधा सेर दाल दो छटांक घी १ तोला नमक मिर्च का है। मन्दिर महावीर जी का सेठ कन्हैयालाल मुरलीधर चमड़िया रतनगढ़ वालों का लागत ८५०) रु० का बना है, धर्मशाला पञ्चायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओर से लागत २५००) रु० की और एक रसोई घर सेठ हीरालाल १५५०) रु० की है। सेठ श्रीराम जी दिल्ली वालों की ओर से प्याऊ धर्मार्थ लगती है।

यहां से आध मील पर छोटा नारायण का मन्दिर है। मूर्ति विशाल है, सामने रुद्राक्ष के वृक्ष हैं।

सौडी—छोटा नारायण से १॥ मील पर सौड़ी चट्टी है।

चन्द्रापुरी—सौड़ी से २ मील पर है। यहां चन्द्रशेखर महादेव और दुर्गा जी का मन्दिर है मन्दाकिनी और चन्द्रा नदी का संगम है, यहां पुल पार करना पड़ता है चट्टी अच्छी है।

भीरी—चन्द्रापुरी से २॥ मील है, मन्दाकिनी पार करने के लिए एक सुन्दर पुल बना है! भीम जी के दर्शन हैं। टिहरी तथा बूढ़ा केदार से एक मार्ग (बटिया) यहां पर आ मिलता है।

कुंड—भीरी से ३॥ मील है कुछ ठंड शुरू होती है। आगे १॥ मील की चढ़ाई है।

गुप्तकाशी—कुन्ड से २॥ मील है! शिवजी के दर्शन हैं। स्थान अच्छा है, डाक बंगला और पोस्ट आफिस है। धर्मशाला श्रीमान सेठ ईश्वरदास धर्मचन्द सिंघानिया की लागत ४५००) रु० की है। मकान यात्रियों के निवास को अच्छे हैं, मन्दिर बहुत प्राचीन है, यहां गुप्तदान देने का बड़ा महात्म्य है। मन्दाकिनी को पार सामने दो मील पार ऊखीमठ है यहां शफाखाना भी है और केदारनाथ के रावल जी की गद्दी है।

गुप्तकाशी से १॥ मील नाला चट्टी। केदारनाथ से लौट कर इसी जगह से सीधे ऊखीमठ होते हुए बद्रीनाथ जी को जाते हैं।

नाला से १॥ मील माता देवी का मन्दिर है, चट्टी अच्छी है, जल सुन्दर है, प्राचीन मन्दिर के अलावा ४५ मन्दिर और भी हैं।

नारायण कोटी——माता देवी से १ मील नारायणकोटी है इस चट्टी को भेता भी कहते हैं। मन्दिर में प्राचीन-विशाल मूर्ति है, स्थान अच्छा है। आगे एक मील उतार का रास्ता उतर कर ब्यांग चट्टी आती है। यहां नदी के पास लकड़ी के बर्तन बहुत सुन्दर बनते हैं।

आधा मील की चढ़ाई चढ़ कर ब्योंग मल्ला चट्टी है।

मैखण्डा——ब्योंग से दो मील पर महिषमर्दिनी देवी का मन्दिर और हिंडोला है। यहाँ महात्मागण निवास करते हैं। कोई कोई यात्री झूला भी झूलते हैं।

फाटा——मैखण्डा से २ मील है। यहां दुकानें अच्छी हैं। सब माल मिलता है. पनचक्की और सरकारी धर्मशाला है। रास्ता सीधा है।

रामपुर——फाटा से तीन मील है। धर्मशाला श्रीमान् सेठ छबीलदास लछमीदास भीम जी बम्बई निवासी की लागत २०००) रु० की है।

यहाँ बाबा जी के पंचायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओर से पट्टू कम्बल ५ रोज के लिए दिया जाता है। फ़ालतू सामान को भी यहीं रख लेना चाहिए क्योंकि इसी रास्ते से वापिस आना होता है।

यहाँ धर्मशाला सेठ सनेहीराम जी जवाहरमल खेमका झूँझनू निवासी की लागत २८००) रु० की है यहाँ बगीचे के लिए एक नाली जमीन पं० हनुमान प्रसाद हैदराबाद दक्खिन वालों ने ले रक्खी है।

त्रियुगी नारायण—रामपुर से ४॥ मील है। रास्ता सीधा और चढ़ाई का है। पहले १॥ मील पटागाड का पुल है। यहाँ से एक रास्ता त्रियुगी नारायण को चढ़ाई का है और दूसरा सीधा केदारनाथ जी को जाता है। पाटागाड से ३। मील त्रियुगी नारायण है दर्मियान में मनशा देवी का मन्दिर है। यहां आराम करते हैं पानी की धारा पास है।

त्रियुगी में धूनी है। मंदिर विशाल है, ठंड अधिक है स्नान के लिए कुंड है मंदिर और कुण्डों की मरम्मत पंडित गोपालशङ्कर, बेनीशङ्कर जी भरुच मुकाम अहमदाबाद निवासी ने की है। लागत ६००) रु० लगा है, मंदिर के पास धर्मशाला श्रीमान जगन्नाथ मदनगोपाल मेहता ने लगत ६००) रु० से बनवाई थी जिसकी मरम्मत सेठ नेतराम जी रामबख्श केड़िया रंगून वालों ने कराई लागत १३००) रु० पञ्चायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओर से एक रसोई घर बना है और एक नाली जमीन और खरीद रक्खी है। धूनीमें होम कराने का बड़ा महात्म्य है धर्मशाला श्रीमान् हरीबक्श जी गोवरधनदास जी देवड़िया कलकत्ता निवासी की लागत २०००) रु० सदावर्त सेठ लक्ष्मीनारायण जी भगवान दास सामानी मोलासर वालों का आटा ऽ॥≈ दाल ऽ≈ घी एक तो० का है।

सोमद्वारा—त्रियुगीनारायण से ३। मील की उतार उतर कर सोमप्रयाग में पहुंचते हैं। यहां पर सोम नदी और मन्दाकिनी का संगम है। पुल पार कर १ मील पर मुंडकटा गणेश है।

गौरीकुण्ड—सोमद्वार से ३ मील गौरी कुण्ड है रास्ता अच्छा बन गया है, थोड़ी चढ़ाई है यहां एक कुण्ड में गरम

जल और दूसरे में शीतल जल है। कुण्डों में स्नान किया जाता है, सदावर्त सेठ बल्देवदास जी बाजोरिया कलकत्ता वालों की ओर से आटा ऽ॥= दाल ऽ= घी १ तो० और नमक मिर्च का है। धर्मशाला सेठ साधुराम जी तुलाराम कलकत्ता वालों की ओर से बनी हुई है।

गौरीकुण्ड से एक मील चिरपटिया भैरों है, यहां पर वस्त्र चढ़ाया जाता है। चिरपटिया से एक मील भीमसेन शिला है।

रामबड़ा—गौरीकुण्ड से ४ मील, और भीम शिला से दो मील है। यहां धर्मशाला पंचायती क्षेत्र की लागत ५५००) रु० की है, जिसमें १०००) रु० सेठ उत्तमचन्द जी धारीलाल अमृतसर वालों की ओर १६५१) रु० सेठ नेतराम जी रामबक्स रंगून वाले के और बाकी २८४६) पंचायती क्षेत्र ऋषीकेश की ओर से लगे हैं, ऊपर जाते सेठ लच्छीराम चूड़ी वाले बम्बई निवासी की ओर से आटा ऽ॥= दाल ऽ= घी १ तो० और नमक मिर्च लकड़ी ऽ१ का सदावर्त है। केदारनाथ जाकर शाम को वापिस रामबाड़ा में आ जाते हैं। इसलिए फालतू सामान यहीं छोड़ जाते हैं।

पुरीकेदारनाथ—रामबाड़ा से दो मील देवदखिनी है। यहां से श्री केदारनाथ जी का मन्दिर दिखाई देता है। और देव देखनी से १ मील पुरी केदारनाथ है मंदिर पाडवों का बनाया हुआ बहुत पुराना है। सं० १६५१ में कलकत्ता के सज्जनगणों

ने छतरी बनवाई थी पुरी अति शीतमय है। यहां स्नान, दान, ध्यान का महान् पुण्य है। यहां धर्मशाला श्रीमान् मुलतानचन्द नागरमल की लागत ५००) रु० श्रीमान् हृषीनाथ, शिवकृष्णदास बागड़ी की लागत ६००) रु० घाट श्रीमान् गौरीदत्त बालमुकुन्द गनेड़ी वाले की लागत ५००), घाट पर मकान श्रीमान् सन्नीलाल जी हनुमानदास का था जो गंगाजी ने बहा दिया अब सेठ मटरूमल जी धनालाल हाथरस वालों की तरफ़ से बनाया जायेगा और धर्मशाला बनाने के लिए श्रीमती रानी जैदेई ने १०००) रु० दिए हैं। धर्मशाला बन चुकी है। उदक कुण्ड के जल का चरणामृत लेने का बड़ा महात्म्य है अन्न लकड़ी वगैरह सब तेज भाव से मिलते हैं सदावर्त श्रीमान् रा० ब० गोरखराम जी रामप्रताप चमड़िया कलकत्ता वाले का आटा १० छटांक दाल २ छटांक या वेसन घी १ तो० चाय ६ माशा गुड़ १ छ० लगता है, धर्मशाला सेठ जयरामदास भागचन्द्र धामण गांव वालों की लागत ४०००) रु० और पंचायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओर से १५००) रु० सेठ जैनारायण जी की ओर से ३००) रु० और सेठ रामप्रताप जी नेमाणी की ओर से ३५१) रु० सेठ गंगाधर जी ठेकेदार ढोडर निवासी की धर्मशाला, लागत ५०००) रु० और ११००) रु० लागत की जमीन श्रीमान सेठ जोखीराम जी जानकीदास सिधानिया गंगासर वालों ने क्षेत्र के लिए खरीदी थी इस जमीन पर धर्मशाला, आयुर्वेदिक औषधालय रायबहादुर हजारीमल दूधवे वाले कलकत्ता निवासी की ओर से लागत ११०००) रु० का है। सदावर्त

राय बहादुर हजारीमल जी दूधवे वाले की ओर से १० मूर्ति रोज और सेठ जानकीदास रंगलाल गांग्यासर वालों की ओर से ६ मूर्ति को रोजाना भोजन दिया जाता है। सरकार गवर्नमेंट ने ६॥≈ नाली जमीन जो धर्मशाला के मुतसिल पर है अस्पताल का मकान बनाने के लिए दी है। ५०००) रु० श्रीमान सेठ रा० ब० हजारीमल जी सोहनलाल कलकत्ते वालों ने नल के वास्ते दिए हैं। केदारनाथ जी के जगमोहन की मरम्मत सेठ कन्हैयालाल खण्डेलवाल गूढ़ा निवासी ने पंचायती क्षेत्र द्वारा करवाई है। दवाईखाना केदारनाथ जी में भगत जयदयाल जी गोयनका बाँकुड़ा वालों की ओर से है, दवाई मुफ्त दी जाती है केदारनाथ की ऊचाई समुद्र की सतह से ११००० फुट है। यहाँ बद्रीनाथ से अधिक ठंडा है। ४८ वें मील से आगे फर्शबन्दी हो जाने से रेतकुंड और हंसकुण्ड की शोभा अधिक बढ़ गई है यह पुरी ६ महीने बर्फ से ढकी रहती है। यहाँ के दर्शनीय एवं मनोरंजक दृश्य भृगूपंथ-मधगंगा क्षीरगंगा-चोराबाड़ी ताल, वासुकी ताल गुगुकुण्ड भैरव शिला आदि २ हैं। दर्शन करके पीछे २३ मील नाला चट्टी तक उसी मार्ग से लौट आते हैं। केदारनाथ से बद्रीनाथ १०२ मील है. केदारनाथ जी से वापस गौरीकुंड, रामपुर आदि होकर नाला चट्टी तक आना होता है।

नाला चट्टी से १॥ मील उतर कर मन्दाकिनी गंगा का पुल पार करके १॥ मील चढ़ाई चढ़ कर ऊखीमठ मिलता है, जाड़ों में श्री केदारेश्वर की पूजा यहाँ ही होती है। यहां ऊषा अनिरुद्ध और चित्ररेखा की मूर्ति है। ओंकारेश्वर का मन्दिर है,

पोस्टऑफिस शफाखाना है। श्रीमान रायबहादुर कस्तूरचन्द बिश्वेश्वरदास डागा बीकानेर वाले की धर्मशाला लागत ४०००) रु० की थी जो खंडहर हो जाने से श्री बल्देवदास जी डूंगरमी दास आभरिया कलकत्ता वालों ने नई बना दी है।

पंचायती क्षेत्र ऋषिकेश ने भी १०० हाथ लम्बी और ८ हाथ चौड़ी जमीन धर्मशाला के अन्दर खरीदी हुई है धर्मशाला की बड़ी जरूरत है और जमीन लेने का भी कोशिश हो रही है। आगे भी रास्ता कुछ दूर तक चढ़ाई का है। एक बटिया १८ मील द्वितीय केदार मध्महेश्वर को जाती है।

गणेश चट्टी—उखीमठ से ३॥ मील है। रास्ता अच्छा है।

पोर्थीवासा—गणेश चट्टी से ५ मील। रास्ता चढ़ाई का है। यहां कुछ ठंड है, काठ के सुन्दर वर्तन बनते हैं।

बनियाकुण्ड—पोर्थीवासा से २ मील है। यहां धर्मशाला के लिए कुछ जमीन बाबा जी के पंचायती क्षेत्र ने हासिल कर रक्खी है जिस पर धर्मशाला श्रीमान सेठ लच्छीराम जी बसन्तलाल दूधवे वाले नाथाणी कलकत्ता निवासी की ओर से बनी हुई है। यहाँ पर सदावर्त भी इन्हीं श्रीमान की ओर से लगता है।

चोपता—बनियाकुण्ड से १ मील है। यहां से एक रास्ता ३ मील तृतीय केदार-तुङ्गनाथ को जाता है, चढ़ाई सख्त है।

तुङ्गनाथ पर्वत के शिखर पर है। यहां धर्मशाला श्रीमान सेठ जगनप्रसाद जी बैजनाथ दूधवे वाले नाथाणी कलकत्ता निवासी की लागत ५००० रु० की है। यहाँ पर सड़क श्रीमान सेठ राय बहादुर हजारीमल जी दूधवे वाले ने बनवाई है। दूसरी ओर से उतर कर चोपता से १॥ मील आगे पहिली सड़क में दर्शन करके आना होता है।

जङ्गल चट्टी—तुङ्गनाथ से ३ मील उतर कर भीमड्वार तथा जंगल चट्टी है। यह सीधी सड़क चोपता की आ गई है यहां से सघन जंगल शुरू है।

पांगरवासा—जंगल चट्टी से २॥ मील है। रास्ता उतार का है। चोपता से यह चट्टी ४ मील पर है।

मंडल चट्टी—पांगरवासा से ४ मील है। रास्ता उतार का है। बालखिल्या नदी पास बहती है मैदान अच्छा है, धर्मशाला श्रीमान सेठ रामचंद जी कन्हैयालालजी गोयन्दका की लागत ६०००) रु० की है। यहां से २ मील सिटोना चट्टी है रास्ता सीधा है।

गोपेश्वर—मंडल से ४॥ मील है यहां बहुत प्राचीन मन्दिर और अष्टधातु का फरसा है रास्ता सीधा है। गोपेश्वर के पुजारी भी रावल पदवी से पुकारे जाते हैं, स्थान अच्छा है। यहां पानी के नल की जरूरत है।

चमोली— गोपेश्वर से तीन मील उतराई उतर कर लालसांगा हैं इसको चमोली भी कहते हैं। यहां डाकखाना तार-घर, शफाखाना, अपर गढ़वाल की अदालत तथा तहसील भी हैं। धर्मशाला श्रीमान सेठ रायबहादुर हजारीमल दूधवे वाले कलकत्ता निवासी की लागत ४०५०) रु० की है और श्रीमान सेठ बिसेसरलाल जी कमेरा बिसाऊ निवासी हाल कलकत्ता वाले की लागत ५०००) रु० की है। पानी की यहाँ बहुत कमी थी अब नल लग गया है। पुल बन गया है। यात्रा के समय प्याऊ बाजार के दोनों किनारों पर और सदावर्त सेठ रामरिखदास जी परसराम पुरिया बम्बई वालों की ओर से आटा ꠳॥= दाल ꠳= घी १ तोला लकड़ी १ सेर और नमक मिर्च का चलता है। आते जाते दोनों समय दिया जाता है। रुद्र प्रयाग से जो सड़क सीधे बद्रीनाथ को जाती है वह भी यहां पर आ मिलती है। अब बद्रीनाथ यहां से ४८ मील रह गया है। ६ मील तक रास्ता सीधा है। रुद्र प्रयाग से चमोली तक के मार्ग का वर्णन पीछे करेंगे। एक धर्मशाला अब सेठ गणेशराम जी मुरलीधर नीमच वालों की तरफ से भी बनी है।

मठ—चमोली से दो मील मठ चट्टी है। पहिले आध मील की मामूली चढ़ाई बाद को सीधा है। यह बड़ी सुन्दर जगह है।

छिनका—मठ से १॥ मील है।

सियासैंण—छिनका से तीन मील है। रास्ता सीधा, स्थान अच्छा है। मठ से पहिले १ मील छिनका है, और छिनका से

१ मील बाजल चट्टी है इससे कुछ आगे के सामने बिरही गंगा अलकनन्दा में मिलती है, बिरही ताल के टूटने से सम्वत् १९५१ में गंगा जी में बाढ़ आई थी।

हाट—सियासैंण से १ मील हाट चट्टी है। यहां से आध मील पर अलकनन्दा का पक्का पुल है। इस पुल से आगे १ मील की खासी चढ़ाई है।

पीपलकोटी—हाट से दो मील है। चट्टी सुन्दर है, डाकखाना, डाक बंगला भी है। धर्मशाला है। सदावर्त सेठ सागरमल जी मोदी झूंझनू वाले मुकाम बम्बई निवासी की ओर से आटा १० छ० दाल २ छ० घी १ तोला और नमक मिर्च का है। धर्मशाला सेठ रामचन्द्र शंकरलाल नांदेड़ की ओर से बनी है।

गरुड़गङ्गा—पीपलकोटी से ३॥ मील है। यहां गरुड़ जी की मूर्ति है। यहां स्नान दान करते हैं। यात्री ब्राह्मणों को पेड़े और थाली देते हैं। श्रीमान सेठ मोहनलाल रामचन्द्र डागा जलपाईगोड़ी वाले की धर्मशाला लागत ५०००) रु० की बनी है और सदावर्त श्रीमान् सेठ मोतीलाल रामचन्द्र मुकाम लादड़िया वालों की ओर से लगता है।

टंगनी—यहां से १॥ मील है रास्ता कुछ चढ़ाई बाकी सीधा है।

पातालगंगा—टंगनी से ३ मील है रास्ता खतरनाक है।

गुलाबकोटी——पातालगंगा से दो मील है। रास्ता अच्छा है स्थान भी अच्छा है, यहां एक इन्सपेक्शन बंगला भी है।

कुम्हार चट्टी (हेलंग)——गुलाब कोटी से दो मील है। धर्मशाला सेठ रायबहादुर हजारीमल दूधवे वाले की लागत ५०००) रु० की और मरम्मत में ६०००) लागत और लगी है। आटा १० छ० दाल २ छ० घी १ तोला का सदावर्त और जल की धारा भी धर्मशाला के सामने इन्हीं श्रीमान की ओर से बनी है, लागत १५००) रु०। हेलंग के सामने अलकनन्दा जी के उस पार दूसरी तरफ पंचकेदार-कल्पेश्वर महादेव जी का मन्दिर है और उरगम बद्री का मन्दिर भी है। यहां एक धर्मशाला भी पंचायती क्षेत्र की उरगम में है। सब चीजें मिलती हैं। यहां कर्मनाशा गंगा बहती है।

चतुर्थ केदार——रुद्रनाथ को रास्ता मन्डल चट्टी से जाता है।

खनेटी——झड़झूला से २॥ मील है। यहां से आध मील नीचे ध्यान बद्री है।

झड़झूला——हेलंग से ३॥ मील है। रास्ता सीधा है।

जोशीमठ——खनेटी से १ मील है। धर्मशाला श्रीमान् पं० गोपालशङ्कर वेणीशङ्कर जी भचेच अहमदाबाद वाले की लागत ७३००) रु० और १६०००) रु० इन्हीं श्रीमान ने सदावर्त के लिए जमा कर रखे हैं जिसके सूद से ८ छ० आटे का सदावर्त

मिलता है। शीतकाल में ६ महीने बद्रीनाथ जी की पूजा यहीं होती है। यहां डाकखाना, तारघर, शफाखाना और बंगला भी है। नभगंगा दंडधारा का स्नान होता है, नृसिंह जी का दर्शन है। यहां से ८ मील पर तपोवन में गर्म जल के कुण्ड हैं और भविष्य बद्री है। यहां से एक रास्ता नीतिघाटा होकर तिब्बत में कैलाश को जाता है।

ज्योतिषपीठ—श्री शंकराचार्य का मठ है और अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरू श्री शङ्कराचार्य श्री ब्रह्मानन्द जी सरस्वती वर्तमान ज्योतिष्पीठाधीश्वर हैं और बड़े प्रसिद्ध योगी हैं। आपके त्याग, वैराग्य की महिमा प्रसिद्ध है और आपके हजारों शिष्य हैं। बड़ा दिव्य स्थान है।

विष्णुप्रयाग—जोशीमठ से तीन मील उतराई उतर कर है। विष्णुगंगा और अलकनन्दा का संगम है, विष्णु जी का मन्दिर है, बहाव तेज है स्नान लोटों से करते हैं।

यहां से १ मील बलदौड़ा चट्टी है। यहां धर्मशाला श्रीमान रामचन्द्र पन्नालाल डालमियां की लागत ६००) रु० और धर्मशाला सेठ हरनन्दराय फूलचन्द सर्राफ लछमनगढ़ निवासी की लागत ४२५) रु० की है।

घाटचट्टी—बलदौड़ा से ३ मील है। मार्ग सीधा स्थान अच्छा है।

पांडुकेश्वर——घाट से १॥ मील है। योगबद्री का मन्दिर सामने शिखर पर पाण्डव शिला है। धर्मशाला श्रीमान् रामरतन गजाधर पोद्दार नवलगढ़ वाले की लागत ४०००) रु० की और धर्मशाला में सदावर्त श्रीमान सेठ रामरिखदास जी परसराम पुरिया बम्बई वालों की ओर से आटा १० छ० दाल २ छ० घी १ तोले और नमक मिर्च का है। यहां से पट्टू साधु, यात्रियों को ७ दिन के लिए दिये जाते हैं जो कि वापसी में फिर वापिस लिए जाते हैं।

पांडुकेश्वर से १॥ मील पर शेषधारा में वैष्णव आश्रम है।

हेमकुन्ड——इस स्थान में श्री गुरु गोविन्दसिंह जी ने तप किया था उनकी स्मृति का दिव्य तीर्थ है। यहां क्षेत्र की धर्मशाला है पांडुकेश्वर से ४ मील चलकर गंगा जी पार कर ७ मील जाना पड़ता है।

लामबगड़——शेषधारा से १ मील लामबगड़ है। यहां पर एक धर्मशाला श्री बी० एन० सरकार मालिक दी न्यू थियेटर्स लि० कलकता वालों ने अपनी स्वर्गीय माता श्रीमती नलिनी रंजन सरकार की पुण्यस्मृति में १५०००) रु० की लागत से बनाई है। यहां पर सदावर्त श्रीमान रायबहादुर सेठ कस्तूरचन्द विश्वेश्वरदास जी डागा बीकानेर वालों की ओर से लगता है।

हनुमान चट्टी——लामबगड़ से ३॥ मील हनुमान चट्टी है। धर्मशाला महावीर जी का मंदिर, एकाजी मोती जी मन्दसौर

मिश्रसो ने बनवाया लागत ७००) रु० श्रीमान सेठ जेठा भाई बूलचन्द मालिक 'अमरचंद माधो जी कम्पनी' कलकता निवासी ने धर्मशाला लागत २५००) की बनवाई। दूसरी धर्मशाला श्रीमान सेठ रूढ़मल जी सागरमल जी आलमाल भिवानी वाले की लागत १०००) रु०।

अब श्रीमान सेठ सागरमल जी सुपुत्र सेठ रूढ़मल जी आलमल ने २०००) रु० लगाकर धर्मशाला की सब मरम्मत करा दी है। सेठ हरदयाल जी रघुनाथप्रसाद कानोडिया राजगढ़ निवासी लागत ५००) माई अशरफी सेठ करोड़ीमल जी के घर से भिवानी लागत ५००) माई लक्ष्मी धर्मपत्नी सेठ लादूराम जी काइयां भिवानी लागत ३००) सेठ मुरलीधर जी की धर्मपत्नी माई जड़िया मदनचन्द जी दीपचन्द बम्बई निवासी की लागत २००) सेठ गोयन्दका चुरू निवासी की लागत १००) पंचायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओर से जमीन खरीदी गई थी लागत ७००) और बनवाने पर १४००) लागत लगी है। एक धर्मशाला चतुरभुज जी रंगलाल मांडला वालों की ओर से बनी है लागत ५०००) रु० यहां पांडवों का यज्ञ हुआ था उस यज्ञ के होम किये हुए जौ निकलने लगे हैं, अब भी यात्री लोग होम करते हैं। मंदिर प्राचीन है, सदावर्त श्रीमान सुगनचन्द गोविन्दराम बीकानेर निवासी की ओर से चाय ६ माशा व १ छटांक गुड़ जलपान के वास्ते मिलता है।

यहां से एक मील घोरसिल पुल। घोरसिल पुल से १ मील रडंग पुल। इस पुल से १ मील कांचन गंगा है रास्ता चढ़ाई का है। कांचन गंगा के वार पार दो धर्मशाओं की जरूरत है क्योंकि बरसात में बाढ़ आने पर यात्रियों को बहुत तकलीफ होती है।

यहां से ॥ मील देवदेखनी है। यहां से श्री बद्रीनाथ जी के मन्दिर के दर्शन होते हैं। आध मील पर आगे अलकनन्दा का पुल है। इसको श्रीमान् रायबहादुर भगवानदास बागले की धर्म-पत्नी ने बनवाया था लागत ४२००) रु० और मरम्मत के लिये सरकार में ५००) जमा थे यह पुल अब दुबारा बनाया गया है।

श्री बद्रीनाथपुरी—देवदेखनी से पौन मील है। भगवान् जी की विशाल मूर्ति है। मन्दिर विशाल है। श्री बद्रीनाथ जी का प्रबन्ध यू० पी० सरकार द्वारा नियुक्त ११ मेम्बरों की कमेटी के आधीन है। तप्तकुण्ड पास है।

श्री बद्रीनाथ मन्दिर के पट खुलने के समय पहले दिन का पक्का भण्डारा श्रीमान सेठ रामरिखदास जी परसराम पुरिया बम्बई वालों की ओर से होता है और सदावर्त श्रीमान् सेठ आनन्दराम जी जयपुरिया ट्रस्ट फण्ड कलकत्ते वालों की ओर से दिया जाता है।

यहाँ पर एक बहुत बड़ी धर्मशाला कानपुर निवासी श्रीमान सेठ सर पद्मपत जी सिंहानिया की ओर से ३००००) रु० की लागत से बनी है। तथा एक बहुत बड़ा स्थान श्रीमान सेठ बलदेवदास

बैजनाथ जी नाहरसरिया कलकत्ता वालों ने २५०००) रु० की लागत से बनवाया है। इस धर्मशाला के सम्बन्ध में सेठ बलदेव-दास बैजनाथ जी की यह आज्ञा है कि यहां पर अमीर गरीब सबको समान सुविधा ठहरने की दी जाये।

एक धर्मशाला श्रीमान सेठ राय बहादुर हजारीमल जी दूधवे वाले की ओर से ६०५१) रु० की बनी हुई थी अब श्रीमती सेठानी जी धर्मपत्नी राय बहादुर सेठ हजारीमल जी दूधवे वाले माता सेठ सोहनलाल जी ने २००००) रु० लगा कर बहुत अच्छी धर्मशाला नये सिरे से बनवा दी है।

एक धर्मशाला श्रीमान राय बहादुर सेठ रामेश्वरलाल जी साहरिया डिब्रुगढ़ (आसाम) वालों ने १००००) रु० की लागत से यात्रियों के आराम के लिये बनवाई है।

एक धर्मशाला श्रीयुत बी० आर० बेलनकर प्रोप्राइटर गजानन मिल्स सांगली (पूना) निवासी ने ७५००) रु० की लागत से बनवाई है।

एक धर्मशाला श्रीमान गट्टूभाई हरिलाल जी अहमदाबाद वालों ने ४०००) रु० की लागत से बनवाई है।

श्रीमती पार्वती देवी जी सेखसरिया नवलगढ़ वाली ने अपने स्वर्गीय पतिदेव की पुण्य स्मृति में एक स्थान ५०००) रु० की लागत से बनवाया है।

एक धर्मशाला श्रीमान सेठ द्वारकादास जी केडिया मु० पड़रोना (सिसवा बाजार) जिला गोरखपुर वालों ने अपने पूज्य पिता जी श्री भूरामल रामरतन दास जी केडिया की पुण्य-स्मृति में ७५००) रु० की लागत से बनवाई है।

श्रीमान सेठ मगनीराम जी बांगड़ की तरफ से यात्रियों के आराम के लिए ७५१३) रु० की लागत से एक लंगर (Kitchen) बनाया गया है और धर्मशाला में जल का नल तथा फर्श ४२४८॥।) रु० की लागत से लगवाया गया है।

श्रीमान सेठ मन्नालाल लच्छीराम जी संयोगिता गंज इन्दौर वालों की ओर से एक बहुत अच्छा स्थान यात्रियों के आराम के लिये १0000) रु० की लागत से बनाया जा रहा है।

श्रीमान सेठ आनन्दराम गजाधर जी जयपुरिया ने अपनी धर्मशाला की मरम्मत और रसोई घर नये सिरे से बनवा दिये हैं जिससे यात्रियों को बहुत आराम मिलता है।

बहुत से दानियों ने गंगा जी के उस पार भी बहुत सी कुटियायें साधु महात्माओं के लिए बनवाई हैं।

श्रीमान सेठ फतेहचन्द जी मुर्लीधर हिम्मतसिंह कलकत्ते निवासी की ओर से मकान पाठशाला लागत १000) रु० श्रीमान मोहनलाल लक्ष्मीनारायण सर्राफ ने सफाखाना के वास्ते ३ हजार रुपये दिये, बाकी रुपये सरकार ने लगाये। श्री बद्रीनाथ जी के मन्दिर की टीप सेठ हरीलाल रायगोपाल गंडेरी वाले फतेहपुर

निवासी ने कराई लागत ५०००) रु० और जगमोहन नये सिरे से राय बहादुर सेठ कस्तूरचन्द विश्वेश्वरदास डागा बीकानेर निवासी की ओर से बनाया गया लागत ५००००) रु०।

बाबा काली कमली वाले पंचायती क्षेत्र के खर्च से गौशाला बनी थी लागत १२००) रु० अब टूट गई है। और भी कई धर्मशाला हैं। श्रीमान सेठ सूरजमल जी नागरमल जी कलकत्ते वालों की धर्मशाला पिछले दिनों बर्फ से गिर गई थी अब पुनः नई बनाई जाएगी।

पुरी बद्रीनाथ में श्री बद्रीविशाल जी के दर्शन कर यात्री कृतकृत्य हो जाते हैं। मन्दिर में दर्शन : बीच में श्री बद्रीविशाल जी हैं, दाहिनी ओर कुबेर और गणेश जी हैं, बाईं ओर श्री लक्ष्मी जी तथा नर-नारायण ऋषि हैं, आगे ऊद्धव जी, नारद और गरुड़ जी हैं। भूदेवी व लीलादेवी की छोटी २ मूर्तियां भी नर-नारायण भगवान के पास ही में हैं।

बाहर परिक्रमा में दाहिनी ओर भोगमण्डी तथा लक्ष्मी जी का मन्दिर है, बाईं ओर पुरी के रक्षपाल घण्टाकर्ण जी हैं।

मन्दिर में दर्शन बड़ी सावधानी से करने चाहिये, स्थान संकुचित है और भीड़ बड़ी रहती है। पहली शाम को अटका लिखवाकर दूसरे दिन १२ बजे से पहिले २ भोग ले लेना चाहिए।

बद्रीकाश्रम के तीर्थ

१—**पञ्चशिला**—नारदशिला, नृसिंहशिला, बाराहशिला, गरुड़शिला, कूर्मधारा और कुबेरशिला हैं।

२—**पंचतीर्थ**—बह्नितीर्थ (तप्तकुण्ड) प्रह्लादकुण्ड, कुण्ड, कूर्मधारा और ऋषिगंगा (लक्ष्मीधारा) है।

३—**चरणपादुका, शेषनेत्र, वेदधारा, मातामूर्ति, व्यासगुफा,** गणेशगुफा और भीमशिला भी दर्शनीय हैं।

४—**वसुधारा**—बद्रीनाथ से ४ मील आगे है। माना गांव होकर जाते हैं। रास्ता अच्छा है। बड़ी सुबह को जाना चाहिये। शाम को बादल छा जाते हैं इस कारण कुछ दृश्य नजर नहीं आता है।

पञ्चबद्री—(१) आदबद्री (करणप्रयाग से ११ मील पूरब में है), (२) विशाल बद्री (श्री बद्रीनारायण), (३) भविष्य बद्री (जोशीमठ से ८ मील आगे तपोवन में है, वहां दो मील के फासले पर गरम जल के सोते भी हैं) (४) योगबद्री (पांडुकेश्वर में) (५) ध्यानबद्री, जोशीमठ से १ मील नीचे है।

सत्यपथ-यात्रा

बद्रीनाथ से १३ मील है।

यह मार्ग केवल आषाढ़ और श्रावण मास में खुलता है। बद्रीनाथ से आगे दो मील तक सीधा है। फिर ५ मील कुछ कठिन मार्ग से चलकर लक्ष्मीवन तथा अलकनन्दा नदी का

अल्कापुरी से बर्फ के अन्दर आने के पश्चात् सबसे पहले भूमंडल में प्रवाह स्वरूप में प्रकट होने का अच्छा मनोरञ्जक और चित्ताकर्षक दृश्य है। इससे आगे कुछ और विकट मार्ग से होकर ४ मील की चढ़ाई चढ़ कर नर-नारायण पर्वत में गिरती हुई शत धाराओं का दर्शन करते हुये चक्रतीर्थ पहुंचते हैं। यह वर्तुलाकार का बहुत बड़ा मैदान है। यहां पहुंचते ही चित्त प्रकृति देवी के सौन्दर्य को प्राप्त कर ऋषि भावों का अनुभव करता है और इस निर्जन स्थान में भी चित्त स्वतः स्थायी निवास करने को चाहता है। फिर सीधी आध मील की चढ़ाई चढ़ कर सामने के बड़े पत्थर के समीप पहुँचना पड़ता है, वहां से १॥ मील सीधे पश्चिम की ओर चल कर बर्फ की बांकों पर से होकर चलना पड़ता है। सामने काले पहाड़ की चरेटी में सत्यपथ (सतोपन्थ) सरोवर १॥ मील के घेरे का त्रिकुटी के आकार का शुद्ध, निश्चल जल पूर्ण है। इससे आध मील आगे चन्द्रकुण्ड, चन्द्रकुँड से १ मील आगे सूर्यकुँड है। सामने हिमालय की शृङ्गों की श्रेणी सीढ़ियों की तरह दिखलाई देती हैं जिसे स्वर्गारोहण कहते हैं। वास्तव में यह स्थान स्वर्ग तुल्य ही है और यदि शीत न सतावे तो साक्षात बैकुँठ ही प्रतीत होता है।

चक्रतीर्थ प्रातःकाल जाना चाहिये। वहां लकड़ी नहीं होती है, साथ में बनाया हुआ शुष्क भोजन लेजाना चाहिये। टिकने के लिये गुफायें हैं, किन्तु वे वर्षा में टपकती भी हैं।

वापसी यात्रा

श्री बद्रीनाथ जी के दर्शन कर यात्री ४८ मील चमोली (लालसांगा) तक उसी मार्ग से लौट आता है। नीचे लिखी चट्टियां मार्ग में पड़ती हैं—

बद्रीनाथ से हनुमानचट्टी	४ मील	०	फर्लांग
हनुमानचट्टी से पांडुकेश्वर	६ ,,	७	,,
पांडुकेश्वर से घाट चट्टी	२ ,,	६	,,
घाट चट्टी से विष्णुप्रयाग	४ ,,	१	,,
विष्णुप्रयाग से जोशीमठ	१ ,,	६	,,
जोशीमठ से हेलंग	६ ,,	६	,,
हेलंग से गुलाबकोटी	२ ,,	०	,,
गुलाबकोटी से टंगनी	५ ,,	१	,,
टंगनी से गरुड़गंगा	१ ,,	४	,,
गरुड़गंगा से पीपलकोटी	३ ,,	४	,,
पीपलकोटी से सय्यासैंण	३ ,,	६	,,
सिय्यासैंण से मठ	४ ,,	६	,,
मठ से चमोली	२ ,,	०	,,

कुहेड़ चट्टी—चमोली से २ मील है, मार्ग सीधा है।

मैठाणा—कुहेड़ चट्टी से दो मील। चमोली से रुद्रप्रयाग के दो मील आगे तक ११ मील मार्ग सीधा और अच्छा मनोरंजक है।

नन्दप्रयाग—३ मील है। बस्ती रम्य है, अलकनन्दा और मंदाकिनी का संगम है। पानी की धारा श्रीमान गणपतराय खेमका ने मंगवाया है। लागत ६००) रु० परन्तु टूट गई है, नल भी बस्ती वालों ने इधर उधर कर दिए हैं और सदाव्रत श्रीमती नानीबाई स्त्री मोतीलाल जी मर्दी मंगलबेढ़ा वालों की ओर से आटा ऽ॥= दाल ऽ= घी १ तो० और नमक मिर्च का है। यहां पर धर्मशाला की बड़ी जरूरत है।

सोनलाचट्टी—नन्दप्रयाग से ३ मील। पानी कम है। इन्स्पेक्शन बंगला है।

लंगासु—सोनला से ३ मील है। यहां धर्मशाला की जरूरत है।

जकैंडी—लंगासू से दो मील है।

उमट्टा—जैकंडी से दो मील है।

कर्णप्रयाग—उमट्टा से २॥ मील है। देवी का प्राचीन मन्दिर है। पिन्डर गंगा और अलकनन्दा का संगम है। पानी का नल श्रीमान् सेठ विष्णुदयाल हरदयाल सुरेका ने मंगवाया है। लागत ६००) रु० यहां शफाखाना, तारघर डाकखाना और बंगला भी है। धर्मशाला श्रीमान् ललिताप्रसाद हरप्रसाद की लागत ७०००) रु०। यहां कर्णमहाराजने बड़ा यज्ञ किया था। यहां से वापिस होने के लिए दो रास्ते हैं एक तो ऋषिकेश का नीचे

लिखे भांति है (और दूसरा रामनगर काठगोदाम होकर जाता है)।

गोचर—यहां बड़ा रमणीक मैदान है पहिले हवाई जहाज उतरता था और मोटर के रास्ते में पड़ता है इस स्थान पर सेठ द्वारा सेठ डाया भाई चिमनलाल बड़ोदा वालों ने १३५००) रु० की लागत से धर्मशाला बनाई है।

कमेडा—गोचरसैंड से ५ मील है।

शिवानन्दी—कमेडा से ३॥ मील है। स्थान अच्छा है।

रुद्रप्रयाग—शिवानन्दी से ७ मील। रुद्रप्रयाग से ऋषिकेश ८१। मील है। इस मार्ग के वर्णन के लिये पिछले पृष्ठों में देखिये।

नोटः—वापसी के मार्ग तो बहुत से हैं किन्तु इन सब में सुगम और सुलभ मार्ग हरिद्वार, ऋषिकेश का ही है। क्योंकि कुली कण्डी वगैरह करने में सहूलियत रहती है और कम खर्च पड़ता है। रास्ते में चढ़ाई कम पड़ती है।मार्ग देखा हुआ रहता है, और शास्त्रानुसार उत्तराखण्ड के तीर्थः—यमनोत्री, गङ्गोत्री केदारनाथ और बद्रीनाथ की यात्रा हरिद्वार, ऋषिकेश से आरम्भ कर फिर वापिस ऋषिकेश-हरिद्वार को ही लौट आने से पूरी यात्रा और परिक्रमा होती है। मोटर की सवारी करणप्रयाग से श्रीनगर और कीर्तिनगर से ऋषिकेश तक चालू है।

श्रीनगर से कोटद्वार ५९ मील है।

बद्रीनाथ से श्रीनगर १०६ मील है और श्रीनगर से कोटद्वार रेलवे स्टेशन ५९ मील है। इसमें निम्नलिखित पड़ाव हैः—

श्रीनगर से पौड़ी ८ मील। पौड़ी से अध्वानी १० मील। अध्वानी से कलेथ ९ मील। कलेथ से बांघाट ३ मील। बांघाट से द्वारीखाल ७ मील। द्वारीखाल से डाडा मण्डी ६ मील। डाडामण्डी से दुगड्डा ६ मील। दुगड्डा से कोटद्वार ६ मील है। किंतु यात्रियों के लिये यह मार्ग उपयुक्त नहीं है कारण कि इस में चट्टियां नहीं हैं और चढ़ाव उतार बहुत है जो कि अब सरकार ने मोटर सड़क बना ली है तो भी धार्मिक दृष्टि से इस रास्ते नहीं लौटना चाहिए।

गंगोत्री यमनोत्री यात्रा

ऋषिकेश से मोटर बस नरेन्द्रनगर टिहरी होती हुई धरासू तक जाती है। धरासू से उत्तरकाशी १८ मील है। किन्तु जो यात्री यमनोत्री की यात्रा करते हैं वह धरासू से यमनोत्री के रास्ते चले जाते हैं। धरासू से यमनोत्री ४८ मील है। जो लोग देव-प्रयाग से पैदल चल कर पुराने जमाने की तरह यमनोत्री गंगोत्री की यात्रा करते हैं वह ऋषिकेश से देवप्रयाग जाते हैं।

ऋषिकेश से देवप्रयाग होकर यमनोत्री १५२ मील है। ऋषिकेश से देवप्रयाग (४४ मील) तक के मार्ग का वर्णन

पहिले पृष्ठ में हो चुका है। देवप्रयाग से आगे एक मार्ग सीधे बद्रीनाथ को जाता है और दूसरा अलकनन्दा भागीरथी को पार कर भागीरथी के किनारे २ यमनोत्री को जाता है।

खसोड़ा—देवप्रयाग से १० मील है। रास्ता मामूली चढ़ाव उतार का है स्थान अच्छा है। यहां पर धर्मशाला है।

कोटेश्वर—खसोड़ा से ४ मील है। यहां महादेव जी के दर्शन हैं।

बन्डूया—कोटेश्र से ६ मील है। स्थान अच्छा है।

क्यारी—बन्डूया से ८ मील है।

टिहरी—क्यारी से ६ मील है यह भागीरथी और भिलङ्गना के सङ्गम पर ता० २७ दिसम्बर १८१६ को हिज हाईनेस महाराज साहब सुदर्शन शाह जी द्वारा समुद्र की सतह से २६०० फुट की ऊंचाई पर बसाई हुई अत्यन्त रमणीक राजधानी है। यहां बद्रीनाथ और केदारनाथ जी के विशाल मन्दिर हैं। यहां से ९ मील उत्तर की ओर (समुद्र की सतह से ७६०० फीट की ऊँचाई पर) सन् १८७७ में हिज हाईनेस महाराजा साहब प्रतापशाह जी द्वारा बसाई हुई प्रताप नगर नाम की (समर रेजिडेन्स) दिव्य नगरी है, और ३० मील पूर्व सन् १८९६ में हिज हाईनेस महाराजा सर कीर्तिशाह बहादुर के० सी० एस० आई० द्वारा बसाया हुआ कीर्तिनगर नाम का शहर श्रीनगर के पास अलकनन्दा के किनारे पर है। एवं दक्षिण की ओर ४०

मील की दूरी पर कर्नेल हिज़ हाइनेस महाराज सर नरेन्द्रशाह बहादुर के० सी० एस० आई० सी० एस० आई० द्वारा सन १९२० में बसाई हुई नरेन्द्रनगर नाम की नवीन राजधानी (विंटर रेजिडेन्स) है।

टिहरी से (भिलंगना नदी के किनारे २ होकर केदारनाथ करीब ७० मील है, यमनोत्तरी ७४ मील, गंगोत्तरी १०० मील और मसूरी ४० मील है।

पीपलचट्टी—(सराई) टिहरी से ५। मील है। मार्ग सीधा है।

भल्डियाना—सराई से ६ मील है। स्थान अच्छा है। मार्ग सीधा है। यहां धर्मशाला श्रीमान् रामकृष्ण भगवानदास की लागत ५००) रु० और धर्मशाला और श्रीमान् शिवराम जी उदासीराम की लागत १०००) रु० और श्रीमान् गुलाबराय केसरमल की लागत ६००) रु० की है और नेतराम जी गुड्स क्लर्क जयपुर वाले की तरफ से धर्मशाला के लिए २००) रु० । पानी का नल लगने वाला है। आध मील नीचे गंगा जी बह रही हैं। यहां सदाव्रत श्रीमती मिस्रीबाई जबलपुर वालों की ओर से आटा ऽ॥= दाल ऽ= घी १ तो० और नमक मिर्च का है।

छाम—भल्डियाना से ५ मील है। यहां पर एक अच्छी बड़ी धर्मशाला है।

नगून—छाम से ५ मील है। स्थान अच्छा है नदी पास ही है। धर्मशाला श्रीमान रामकृष्ण भगवानदास की लागत ५००)

और श्रीमान लाला दुर्गाप्रसाद सूरतराम खेमका की लागत २५० रु० जो अब गिर गई है। और नई धर्मशाला बनाने की जरूरत है।

धरासू—नगून से ५ मील है धर्मशाला श्रीमान खेतसीदास हरमुखराय रूइया की लागत ५००) रु० और ५००) रु० पंचायती क्षेत्र की ओर से और ५०००) रु० सेठ सागरमल जी रामस्वरूप गोयनका खुर्जा निवासी की ओर से और श्रीमान शिवदयाल सूर्यमल बाजोरिया का सदावर्त आटा ऽ॥= दाल ऽ= घी १ तोला और नमक मिलता है। इन्हीं की तरफ से एक मकान रसोई का बनाया गया है लागत ३००) रु० यहां और एक धर्मशाला सेठ तुलाराम जी गौरीशङ्कर गोयन्दका की लागत ५०००) रु० की है।

कल्याणी—धरासू से ४ मील है। पहिले पाव मील की चढ़ाई और पौन मील सीधा है फिर आध मील की चढ़ाई व आध मील का उतार है, और फिर दो मील तक सीधा मार्ग है इस मार्ग में पानी का बड़ा अभाव है। प्याऊ की जरूरत है।

बरमखाला—गेंउला कल्याणी से ५ मील है। मार्ग सीधा है। यहां पर एक दुकान है।

सिलक्यारा—गेंउला से ५ मील है। मार्ग सीधा है। यहां पर एक धर्मशाला सेठ चान्दमल गौरीशङ्कर दिल्ली वालों की है। चट्टी से आगे चढ़ाई शुरू होती है सड़क के रास्ते जाना चाहिए 'पगडन्डी' का मार्ग बहुत कठिन है। इस मार्ग में प्याऊ की जरूरत है।

सिमली—डंडालगाऊँ से दो मील है। वापसी में इसी चट्टी से एक रास्ता उत्तरकाशी को जाता है।

गंगाणी—सिल्कयारा से १० मील है। यहां पर धर्मशाला खुर्जा निवासी सेठ गौरीशङ्कर जी गोयन्दका की ओर से बनी हुई है। जमुना जी के किनारे एक कुण्ड है जिसको गंगा जी का जल कहते हैं। सदावर्त श्रीमान सेठ बलदेवदास जी बाजोरिया कलकत्ता वालों की ओर से आटा ।।।= दाल ।= घी १ तोला और नमक मिर्च का है। जमुना जी पास ही में बहती है। यमनोत्री की यात्रा करके गंगाणी वापिस आना होता है और यहीं से उत्तरकाशी को रास्ता जाता है।

जमुनाचट्टी—गंगाणी से ६½ मील है। यहां पर सदावर्त श्रीमान सेठ बलदेवदास जी बाजोरिया कलकत्ता वालों की ओर से आटा ।।।= दाल ।= घी १ तोला और नमक मिर्च का है। यहां पर पक्के पुल की जरूरत है। यहां से आगे कुछ दूर तक मार्ग सीधा है। धर्मशाला क्षेत्र की है।

हनुमान चट्टी—जमुना चट्टी से ६ मील है। मार्ग सीधा है। हनुमान गङ्गा का पुल पार करना होता है। धर्मशाला श्रीमान सेठ गौरीशंकर जी गोयनका खुर्जा वालों की ओर से बनी हुई है।

खरसाली—हनुमान चट्टी से ४ मील है। तीन मील सीधा और एक मील की चढ़ाई है। यमनोत्री के पंडागण यहीं रहते हैं।

एक मील नीचे से रास्ता सीधा जमुना को पार करके बीफगाँऊँ को चला गया है। धर्मशाला श्रीमान राजा ललिताप्रसाद जी हरप्रसाद पीलीभीत वालों की लागत १०००) रु० लेकिन अब मरम्मत के योग्य है।

यमनोत्री——खरसाली से ४ मील है। १ मील सीधा है आध मील की चढ़ाई फिर आध मील सीधा, एक मील की चढ़ाई और बाकी एक मील सीधा है। अब सड़क अच्छी बन गई है, पहिले रास्ता अच्छा नहीं था। अब सेठ चान्दमल जी गोयनका, नई मारकेट देहली वालों की ओर से साढ़े तेरह हजार रुपये की लागत से सड़क अच्छी तैयार हुई थी लेकिन अब टूट गई है। यमनोत्तरी में खौलते हुए गरम जल के सोते हैं, जिनमें चावल, रोटी आदि सभी पदार्थ उचित समय पर सिद्ध हो जाते हैं। यमुना जी का मन्दिर है। यह स्थान समुद्र की सतह से १०००० फीट की ऊँचाई पर है। सदावर्त ला० दुर्गाप्रसाद सूरतराम दिल्ली वालों की ओर से लगता है। धर्मशाला सेट गौरीशंकर जी गोयनका खुर्जा वालों की ओर से बनी हुई है। यमनोत्री से वापिस गंगाणी तक उसी रास्ते मे आते हैं। गङ्गाणी से सिंघोट आते हैं।

सिंघोट—गंगाणी से ६ मील है। यमनोत्तरी से वापिस पूर्व कथित मार्ग से ही आकर यहां से आगे एक नई सड़क होकर उत्तरकाशी गङ्गोत्री वाली सड़क में जा मिलती है। जिसका वर्णन इस प्रकार है कि:—पहिले डेढ़ मील तक सीधा मार्ग है तब १॥-

मील की चढ़ाई है फिर आध मील सीधा है और तब आध मील की चढ़ाई चढ़कर 'कला की धार' मिलती है। यहां से आगे ३॥ (साढ़े तीन) मील सिंगोट तक उतार है। सेठ चान्दमल गौरीशंकर दिल्ली वालों की धर्मशाला है।

उत्तरकाशी—सिंघोट से नौ मील। यह परम पुनीत, सुप्रसिद्ध और प्राचीन स्थान है। यहां पर बहुत से पुराने मन्दिर हैं, जिनमें से कि श्री विश्वनाथ जी का मन्दिर, देवासुर संग्राम के समय की छूटी हुई शक्ति विशेष दर्शनीय है और श्री १०८ महाराजा साहेब जयपुर का बनाया हुआ एकादश रुद्र का मन्दिर अत्यन्त मनोहर है। यहां क्षेत्र बाबा जी महाराज के रियासत के अन्दर की धर्मशाला व क्षेत्रों का केन्द्र स्थान है। यह स्थान दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। मणिकर्णिका घाट एक तो श्रीमान गणपत-खेमका चुरु निवासी ने बनाया था, लागत २०००) रु० वह बह गया। दूसरा श्रीमान राय बहादुर भगवानदास बागला की धर्मपत्नी श्रीमती सेठानी जी ने बनवाया है लागत ४०००) रु०। वह भी बह गया था। अब क्षेत्र ने ७०००) लागत से नया पक्का घाट बनाया है।

यहां पर बाबा काली कमली वाला पंचायत क्षेत्र की ओर से १२ महीने सदावर्त लगता है। परमहंसों को भोजन रोज मिलता है और सदावर्त लेने वाले को आटा ऽ॥= दाल ऽ= घी १ तो० नमक मिर्च दिया जाता है। श्रीमान गोपीराम जी तापड़िया रतनगढ़ निवासी का भोजन २० मूर्ति का जाड़े में और १० मूर्ति

का गरमी में और श्रीमान की धर्मशाला भी लागत १५००) रु० की है और धर्मशाला श्रीमान खेतसीदास हरमुखराय की लागत १८००), श्रीमान दुर्गाप्रसाद सूरतराम खेमका की लागत ३०००) रु० श्रीमान यमुनादास जीतमल पोद्दार की लागत २५००) रु० और श्रीमान रामनिरञ्जन बद्रीदास की लागत ८००) रु० धर्मशाला बाई रामसुन्दरी सेठ बिहारीलाल बंका की पुत्री ने १०००) रु० से बनवाई श्रीमान लक्ष्मीचन्द बैजनाथ खेमका लागत १२००) रु० और श्रीमान केदारमल लडिया की धर्मशाला है श्रीमान रामरिखदास जी परसरामपुरिया बम्बई वालों ने २००००) रु० की लागत से उत्तरकाशी क्षेत्र धर्मशाला की मरम्मत कराई है और ऊपर की मंजिल में १० कमरे यात्रियों के आराम के लिये बनवाये हैं। और सब तरह से पूर्व की काशी के सदृश है केदारखण्ड में लिखा है कि मुक्तिदाता यही काशी है, यहां पर बहुत महात्मागण निवास करते हैं।

गङ्गोरी—उत्तरकाशी से ३ मील है यहां पर डोडीताल से निकली हुई असीगंगा भागीरथी जी में मिलती है। एक मार्ग सुप्रसिद्ध ताल 'डोडीताल' को करीब १६—१७ मील जाता है। २ मील के घेरे का यह ताल बर्फानी पहाड़ों के शृङ्गों के बीच एक रमणीक मैदान में है इसका दृश्य बड़ा दिव्य और मनोरञ्जक है।

नैताला—गंगोरी से ३ मील है। मार्ग गंगा के किनारे सीधा चला गया है।

मनेरी—उत्तरकाशी से १० मील है मार्ग गंगा के किनारे २ जाता है। यहां धर्मशाला श्रीमान जीतमल यमुनादास नागपुर वाले की लागत ८०८) रु० और श्रीमान मुलतानचन्द नागरमल जी की लागत २५०) रु० और सेठ मनसुखराय जी रामदयाल दलसुखराय जी नेवटिया की लागत ४०००) रु० की है।

मल्ला चट्टी—मनेरी से ७ मील है। मार्ग अच्छा है। गंगोत्री से वापिस आकर इसी चट्टी से एक मार्ग बूढ़ाकेदार होकर केदारनाथ जी को जाता है। यहां से केदारनाथ ८५ मील है।

भटवाड़ी—(भास्कर प्रयाग) मल्ला चट्टी से दो मील है। मार्ग सीधा है चौकीदार के पास अपना फिजूल सामान रसीद लेकर छोड़ दीजिये गङ्गोत्री से लौट कर फिर ले लीजिए। यहां पर एक पोस्ट आफिस की जरूरत है यहां धर्मशाला श्रीमान् हर्षामल जी सुखदेवदास की लागत २१००) रु० की है और इन्दौर नरेश की धर्मशाला भी है और सदावर्त आटा ८ छ० घी १ तोला नमक का सेठ धनपतराय परमात्माशरण मेरठ वालों की ओर से है।

गङ्गनानी—भटवाड़ी से ६ मील है। मार्ग में आध मील पर एक छोटी नदी 'दीना' का पुल है। बाद को उससे आगे १ मील पर कूला नदी का पुल है। और अन्त में फिर गंगा जी का पुल है। पुल के इस पार ही मार्ग से कुछ ऊपर गर्म जल का सोता है। जो कि 'ऋषिकुण्ड' कहलाता है। यह एक पवित्र और प्रसिद्ध तीर्थ है। जहां स्नान करने के लिए कुण्ड पहिले गंगाविष्णु

जी की माता ने बनवाये थे और उनके बह जाने से उनको फिर क्षेत्र ने बनवाया। यहां से आगे मार्ग मौतदिल (न गर्म न ठंडा) है। यहां श्रीमान राजाराम ब्रह्मचारी जी की प्रेरणा से धर्मशाला राजा ललिताप्रसाद हरिप्रसाद पीलीभीत वालों की ओर से बनी हुई है। ७॥ मील सड़क और धर्मशाला श्री सज्जनानन्द ब्रह्मचारी जी ने बनवाई है।

सुक्खी—गंगनाणी से ६ मील। मार्ग चढ़ाई का है। यहां धर्मशाला चिरं० छोटेलाल खेमका देहली निवासी की माता ने बनवाई लागत १५००) रु० और सदावर्त श्रीमान छोटेलाल जी खेमका देहली निवासी की माता जी की ओर से आटा १० छ० दाल ५ छ० घी १ तो० नमक का है।

झाला—सुक्खी से ३ मील है। एक मील की चढ़ाई है, बाकी दो मील का उतार और सीधा है। यहां धर्मशाला पंचायती क्षेत्र की ओर से लागत १५०) रु० और सेठ जवाहरमल जी सूरजमल खेमका की धर्मशाला लागत ११००) रु० से बनी थी। जो जल गई थी अब नई धर्मशाला श्रीमान सेठ मटरूमल जी चुन्नीलाल हाथरस वालों की ओर से ५०००) रु० लागत की बनी है।

हर्सिल—(हरिप्रयाग) झाला से २ मील है। आध मील पर श्याम प्रयाग (श्यामगङ्गा और भागीरथी का संगम) है यहां पर गंगा जी के प्रवाह का समभूमि में भिन्न २ धाराओं में (केश की तरह) बहने का चित्ताकर्षक अत्यन्त अद्भुत दृश्य है यह

स्थान समुद्र की सतह से ६००० फीट से अधिक ऊंचाई पर है। यहां पहुंचते ही मालूम पड़ता है, कि किसी दिव्यलोक में पहुंच गए हैं। श्यामप्रयाग से पौने दो मील आगे गुप्तप्रयाग और गुप्त-प्रयाग से आध मील पर हरिप्रयाग है। यहां धर्मशाला श्रीमान् दुन्तजाट की है और सदावर्त तथा मन्दिर श्री लक्ष्मीनारायण जी का राजाराम ब्रह्मचारी का है। जंगलात का बंगला है, मेवों का बाग भी है। यहां पर ऊनी वस्त्रः–कोट्टू, शुल्मा दन, पश्मीना आदि बिकते हैं।

अणियां पुल—हर्सिल से आध मील है। यहां पर पुल (भागीरथी पर) है यहां एक छोटी चट्टी भी है।

धराली—पुल से २ मील है। मार्ग सीधा है। यहां चरियाल लोग बसते हैं जो कि तिब्बत के साथ नेलंग घाटी से होकर व्यापार करते हैं। इस मार्ग से कैलास, और मानसरोवर जाने वालों को इन्हें साथ में ले जाना चाहिए। धराली के आस पास साधुओं की कुटियां बहुत हैं और बड़े अच्छे २ प्रसिद्ध महात्मा उनमें निवास करते हैं। यहां पर धर्मशाला श्रीमती राणी साहिबा जैपुर वालों की ओर से है यहां पर श्रीकण्ठ से दूध गंगा आई है। संगम पर महादेव जी का मन्दिर है।

पार में गङ्गा जी के दूसरे तरफ मुखवी मठ है यहाँ गंगोत्री जी के पण्डागण रहते हैं।

यहाँ से १ मील पर मारकण्डे जी का स्थान है यहां शरद ऋतु से ६ मास तक श्री गंगा जी की पूजा होती है, यहाँ पर

क्षेत्र का कोठार श्रीमान चुन्नीभाई माधवलाल जी ने बनवाया है लागत ६००) रु० ।

जांगला——धराली से ४ मील है यहाँ काठ का सरकारी बंगला है। मार्ग अच्छा सीधा और मनोरञ्जक है। यहाँ से डेढ़ मील आगे से एक रास्ता नेलंगघाटी होकर तिब्बत को जाता है।

भैरोंघाटी—जाँगला से २॥ मील है। डेढ़ मील सीधा है, एक मील की चढ़ाई है। यहाँ गन्धक का पहाड़ है इसलिए जमीन सदा ही गरम रहती है। स्थान रमणीक है। देवदार का घना जंगल है। यहाँ पानी के नल की बड़ी आवश्यकता है।

यहां श्रीमान् रघुनाथप्रताप मथुरादास की धर्मशाला लागत १००) रु० और धर्मशाला पीलीभीत वालों की गिर जाने से माई माता मेमराज रूइयाँ व हरनन्दराय घनश्यामदास बम्बई वालों की तरफ से लागत २०००) रु० की नई बनी है और एक पुरानी धर्मशाला पञ्चायती क्षेत्र ऋषिकेश की थी। जिसको नए सिरे से ल० मुर्लीमल जी राधाकिशन अम्बाला वालों की तरफ से बनाया गया है।

एक मील पर भैरों जी का मन्दिर है। कानपुर वालों के २०००) रु० के ब्याज से नल तथा प्याऊ में पानी मिलता है। सदावर्त सेठ अमृतलाल दामोदर दास जी सांकरी सेरी अहमदाबाद वालों की ओर से आटा ऽ॥≈ दाल ऽ≈ घृत १ तोला और नमक मिर्च का है।

गङ्गोत्री—भैरों घाटी से ६॥ मील है। भैरोंघाटी के नीचे मार्ग नया बनने के कारण एक मील और बढ़ गया है, और सारी दूरी हरिद्वार से अब १६३ मील हो गई है, यद्यपि श्री भागीरथी जी का मुख्य उद्गम स्थान (गौमुख) अभी १८ मील और आगे है। तथापि उसके अत्यन्त दुर्गम होने के कारण यात्रीगण अपनी अपनी मनोकामना यहीं पर पा जाते हैं और दर्शन, स्पर्शन, स्नादि करने से तृप्त और कृतकृत्य होकर यहीं से गंगाजल भर ले आते हैं। स्थान कुछ दूर तक सम है। देवदार का घना जंगल है। पुरी से कुछ नीचे केदार गंगा का संगम है और वहां से एक फर्लांग नीचे बड़ी ऊंचाई से गंगा जी शिवजी के लिंग के ऊपर गिरती हैं। यहां पर श्री जैपुर महाराज द्वारा निर्मित श्री गंगा जी का एक विशाल मंदिर है। राजा भागीरथ जी ने पतित पावनी कलिकलुष नशावन परम पुनीत गंगा जी को अपने तपोबल से प्रगट कर जगत का उद्धार तथा महान उपकार किया है।

सदावर्त श्रीमान सेठ लछमनदास सूरजमल जी जटिया खुर्जा निवासी की ओर से आटा ऽ॥= दाल ऽ= या आलू ऽ≡ घी १ तोला नमक मिर्च गुड़ १ छटांक और चाय ६ माशे मिलता है। तीन धर्मशालायें पंचायती क्षेत्र की लागत प्रत्येक की १०००) रु० है। घाट एक तो श्रीमान चुन्नीभाई माधोलाल, अहमदाबाद वालों का लागत ३०००) रु० है। यह घाट वर्षा में गंगाजी ने बहा दिया दूसरा घाट रायबहादुर भगवानदास जी बागला की धर्मपत्नी

ने बनवाया लागत २०००) एक धर्मशाला श्रीमान चुन्नू भाई माधोलाल की लागत ५००) दो धर्मशाला रायबहादुर भगवान दास जी बागला की धर्मपत्नी ने बनवाई लागत १०००) रु० और नीचे लिखे छोटे छोटे मकान बहुत हैं जो कि सज्जन श्रीमानों ने बनवाये हैं। श्रीमान जुहारमल जी रामेश्वर चूरू वालों की धर्मशाला २१०) श्रीमान पूर्णमल जी मुंगेर वालों की लागत १२५) रु० श्रीमान रघुनाथ प्रताप जी राठी मुकाम कंडाली मुल्क बरार लागत १२५) रु० श्रीमती माई सुन्दरी की लागत २५) रु० श्रीमान मंगलदत्त जी नारनोल वालों की लागत १५) श्रीमान नानूराम लक्ष्मीनारायण जी की लागत १५) रु० श्रीमान छोटेलाल जी अहमदाबाद वालों की लागत २५) रु० श्रीमती माई महालक्ष्मी जी अहमदाबाद वाली की लागत १०) श्रीमान सीताराम जी दीक्षित नागपुर वालों की लागत २००) रु० श्रीमान रामराव जी बलवन्तराव मुकाम पोपलाद जिला निमाड़ वालों की लागत १०) रु० श्रीमान लक्षमणदास जी बिहारीलाल अमृत सर वालों की लागत २५०) रु० श्रीमान रघुनाथ प्रताप जी की गुफा लागत १५) धर्मशाला श्रीमती माई भागीरथी माता सेमराज रुइयां हरनन्दराय घनश्यामदास बम्बई वालों की लागत १५००) रु०, धर्मशाला सेठ रमणलाल जी लालू भाई अहमदाबाद वालों की लागत ५०००) रु० । इस स्थान पर पहिले पुरानी धर्मशाला थी जो टूट गई थी अब उक्त दानी की तरफ से नई बनी है और एक धर्मशाला श्रीमती राजामाता प्रभावती जी बनैली वालों की ओर से भी बनी है लागत २५००) रु० ।

यमनोत्री गङ्गोत्री यात्रा मार्ग नं० २

(ऋषिकेश से देहरादून, मसूरी होकर)

हरिद्वार—या ऋषिकेश से रेल में चल कर देहरादून पहुंचते हैं। देहरादून में श्रीमान गुरु रामराय जी की गद्दी है। श्रीमान महन्त इन्द्रेशचन्द्रदास जी महाराज सम्वत् २००२ से गद्दी पर विराजमान हैं। आप सरल हृदय, सुशील, धर्मनिष्ठ, सत्यव्रती तथा अतिथि सेवी हैं। आप स्वयं सर्वगुणसम्पन्न तथा गुणग्राहक हैं।

देहरादून में बाबा जी महाराज के क्षेत्र की ओर से एक प्याऊ रहती है।

राजपुर—देहरादून से ७ मील है। यहां झम्पान, डंडी, घोड़ा इत्यादि सब प्रकार की सवारी मिलती है। बावड़ी के किनारे मकान रहने के लिये बहुत अच्छा है। यहां धर्मशाला की आवश्यकता है। बावड़ी पर यात्रियों के आराम के लिये बर्तन भी रक्खे रहते हैं। यहां से ५ मील की चढ़ाई शुरू होती है। देहरादून से मसूरी तक मोटर सड़क है।

राजपुर से—१ मील पर टोल घर है।

टोल से—२॥ मील जड़ीपानी है।

जड़ीपानी से—१ मील बार्लोगंज।

बार्लोगंज से—२॥ मील मसूरी। यहां एक मन्दिर है। सज्जन श्रीमानों की ओर से अतिथियों को अन्न मिलता है। यहां गर्मी के मौसम में सज्जन श्रीमान निवास करते हैं। यहा एक सरकारी छावनी है। सर्दी अच्छी रहती है।

जबरखेत—मसूरी से १ मील है। मार्ग सीधा है।

सुवाखोली—जबरखेत से ५ मील है। यहां से दो रास्ते सड़क के और एक बाटिया का उत्तरकाशी को जाते हैं। बाटिया वाले रास्ते में धर्मशाला एक फेड़ी में श्रीमान रामनाथ जी फकीरचन्द सहारनपुर वालों की है लागत ३००) रु० अब गिर गई है। टीन और बर्तन बचे हैं। एक धर्मशाला **भवान** में श्रीमान रामदास गोकुलदास खारे वाले की बनी है लागत ३००) । यह धर्मशाला मरम्मत के योग्य हो गई है। एक धर्मशाला **लालूरा** में पंचायती क्षेत्र ऋषिकेश की ओर से है। जो अब नये सिरे से बनाई जावेगी।

एक सड़क बांये हाथ को मौजा थत्यूड़ा होकर सीधे धरासू को और एक सड़क झालकी, कानाताल होकर सीधी टिहरी को या भल्डियाना होकर उत्तरकाशी को जाती है जिसका वर्णन नीचे लिखे भांति है:—

(१) सुवाखोली से थत्यूड़ा होकर सीधे धरासूः—

थत्यूड़ा—सुवाखोली से ६ मील है। पहिले उतार है, सड़क अच्छी है। यह मार्ग अन्य मार्गों से अधिक निकट है।

मोलधार—थत्यूड़ा से ५ मील है। मार्ग सीधा और रमणीक है। विशेषतर सुबह को सारा मार्ग सायादार रहता है। यहां से आगे तीन मील की चढ़ाई घोड्यापा धार तक चली गई है और फिर यहां से ४ मील का उतार है।

अन्धियारी—मोलधार से ७ मील है। मार्ग चढ़ाई उतार का है। टिकने के लिये स्थान गांवों में मिल जाता है। खाने पीने की वस्तुयें भी कीमत पर इन्हीं गांव वालों से मिल जाती हैं।

चापड़ा—अन्धियारी से १ मील है। यहां पर एक बङ्गला है।

त्याड़ चट्टी—चापड़ा से ६ मील है। दो मील उतार और ४ मील की चढ़ाई है यहां से आगे ६॥ मील पर उतार है।

धरासू—चापड़ा से ७ मील है। ६॥ मील पर गंगोत्री की सड़क मिलती है और आध मील आगे धरासू है।

गङ्गोत्री—धरासू से ७५ मील है, जिसका वर्णन पृष्ठ ७० से ८१ तक किया गया है।

(२) सुवाखोली से कानाताल भल्डियाना होकर धरासू।

झालकी—सुवाखोली से १ मील है। यहां धर्मशाला श्रीमान महन्त लक्ष्मणदास जी देहरादून वालों की है। यहां पानी के वास्ते महन्त जी की ओर से नल लगा हुआ है यहां पर और भी धर्मशालाओं की आवश्यकता है।

धनोल्टी—भालकी से ८ मील है। धर्मशाला श्रीमान लाला दुर्गाप्रसाद सूरतराम खेमका की है। लागत २३००)। गिर जाने पर उन्होंने दुबारा बनवाई लागत १५००) रुपया। पानी का नल मामराज रूइयां जी की माता भागीरथी की ओर से लग गया है। लागत २१००) रु०।

कानाताल—धनोल्टी से ८ मील है। यहां धर्मशाला श्रीमान ईश्वरदास जी धर्मचन्द सिंघानियां की है। लागत २४००) रु०। खच्चरों के वास्ते मकान बनाने की तजवीज हो रही है। यहां एक प्याऊ भी है। और एक धर्मशाला श्रीमान शिवदत्त कोतवाल जी की है. यह एक अच्छी ठण्डी जगह है।

आगे एक मील पर दो सड़कें हो गई है एक तो सीधी भल्डियाना होकर उत्तरकाशी-गंगोत्री को गई है और दूसरी टिहरी को। दोनों रास्ते में उतराई शुरू होती है। यहां से टिहरी १४ मील है।

दूसरे मार्ग से भल्डियाना ८ मील है। पहिले ४ मील बन्डवाल गांव है। यहां पर धर्मशाला ला० चरणदास जी भगवानपुर वालों की है यहां पानी कमती है। नल द्वारा पानी लाने की जरूरत है। भल्डियाना यहां से ४ मील है।

यमुनोत्री-गङ्गोत्री यात्रा मार्ग न० ३

(ऋषिकेश—नरेन्द्रनगर--टिहरी होकर)

एक रास्ता ऋषिकेश से नरेन्द्रनगर होकर टिहरी को नीचे लिखे भांति जाता है और ऋषिकेश से टिहरी तक मोटर लारी भी जाती है।

नरेन्द्रनगर--ऋषीकेश से १० मील है। यहां अब मोटर की सड़क चली गई है यह रियासत टिहरी गढ़वाल की राजधानी है। पैदल सड़क ५ मील है।

फकोट—नरेन्द्रनगर से १० मील है। मार्ग सीधा है, यहाँ एक डाक बंगला है।

नागणी—फकोट से १० मील है। ५ मील का उतार और बाकी सीधा है। मार्ग मनोरञ्जक है और एक डाक बंगला है।

चमुआ—नागणी से ११ मील है। ३ मील सीधा बाकी साधारण चढ़ाई है, यहाँ से एक मार्ग करीब १२ मील भल्डयाना को चला गया है।

टिहरी—चमुआ से १० मील है। ८ मील की मामूली उतार बाकी सीधा है। यहाँ से आगे मार्ग का वर्णन पिछले पृष्ठ पर देखो। टिहरी सरकार ने यहाँ तक मोटर सड़क बनवाली है। मोटर अब आगे २५ मील धरासू तक जाने लगी है।

गङ्गोत्री—टिहरी से १०० मील है।

गङ्गोत्री से केदारनाथ १२३ मील है।

गङ्गोत्री से—मल्ला चट्टी [४० मील] तक पूर्व कथित मार्ग से ही लौटते है, आगे कुछ कठिन मार्ग से चलना पड़ता है इस मार्ग को शीघ्र बनवाने का प्रयत्न किया जाता है।

मौराकींगाड—(स्याली) मल्ला से ३ मील है । मार्ग सीधा है किन्तु मरम्मत के योग्य है। यहाँ धर्मशाला श्रीमान सेट रामस्वरूप जी जगन्नाथ पीलीभीत वालों की है।

फ्यालू—स्याली से ३ मील है, मार्ग कठिन चढ़ाई का है

छूंणा चट्टी—फ्यालू से ३ मील है, एक मील चढ़ाई और २ मील सीधा है। धर्मशाला गोकलचन्द जी कानूनगोय की है।

बेलक—छूंणा से ४ मील है। चढ़ाई कठिन है।

पङ्गरांना—बेलक से ५ मील है। उतार तेज है।

झल्ला चट्टी—पंगराना से ४ मील है। २ मील उतार चलकर पाव मील की चढ़ाई है तब सीधा चला गया है। अन्त में डेढ़ मील का बड़ा उतार है, धर्मशाला की बड़ी जरूरत है। धरम गंगा पर एक पक्का पुल भी बनाने को है। यहां से आगे मार्ग सीधा चला गया है।

बूढ़ा केदरा—झाला से ५ मील है। तीन मील पर अगूंडा गांव मिलता है और वहाँ से २ मील पर बूढ़ा केदार है यहां

शिवजी का मन्दिर है। धर्मशाला रायबहादुर साहू जगन्नाथ पीलीभीत वालों की लागत (१८००) रु०। यहाँ एक पोस्टआफिस की बड़ी जरूरत है।

तोला चट्टी—बूढ़ाकेदार से ४ मील है। कुछ चढ़ाई है बाकी सीधा है। इसे मालदा या मालेधार भी कहते हैं।

भैरों चट्टी—तोला चट्टी से ३ मील है। यहां भैरव जी का मन्दिर है, हनुमान जी के भी दर्शन हैं, मार्ग चढ़ाई का है।

भौंटा चट्टी—भैरों चट्टी से दो मील है। आध मील की साधारण चढ़ाई है।

घुत्तू चट्टी—भौंटा चट्टी से ७ मील है। मार्ग चढ़ाव उतार का है यह भिलंगना नदी के किनारे पर बसा हुआ है। यहां सदावर्त श्रीमान सेठ घनश्यामदास रामकुमार पुरुलिया वालों की ओर से आटा ≶॥ और नमक का है, धर्मशाला क्षेत्र की प्रेरणा से एक गुप्त श्रीमान जी की है। यहां रघुनाथ जी का मन्दिर भी है आगे मार्ग चढ़ाई का है।

गवाना चट्टी—घुत्तू से १ मील है।

गोमांडा—गवाना से ३ मील है। रास्ता चढ़ाई का है।

दुफन्दा—गोमांडा से ३ मील है। मार्ग चढ़ाई का है।

पंवाली—दुफन्दा से तीन मील है। यहां धर्मशाला रामनारायण जी लक्ष्मीनारायण प्रतापगढ़ वालों की ओर से बनी थी लागत (१५००) रु० जो गिर जाने से नये सिरे से सेठ

साधूराम जी तुलाराम कलकत्ता वालों की ओर से बनाई गई है। सदावर्त काली कमली क्षेत्र की ओर से आटा 5।। और नमक का है। घुत्तू और पंवाली के दर्मियान श्रीमान सेठ मुकुटबिहारीलाल जी मुरादाबाद निवासी की ओर से यात्रा काल में प्याऊ लगती है। लागत १००) रु०।

मग्गू चट्टी——पंवाली से १० मील है। पहिले पंवाली से ४ मील तक मार्ग बर्फ पर से होकर चलता है। कारण कि यह जगह ११००० फुट की ऊंचाई की है। बाकी ६ मील मार्ग सुगम है। यहां धर्मशाला सेठ जेठा जी बूल जी की ओर से बनी है। लागत १०००) रु० और एक धर्मशाला श्रीमान् सेठ हरदत्तरायजी नन्दलाल जी लीहला रंगून वालों की लागत १३००) रु०। सदावर्त सेठ बद्रीदास जी राधाकिशन गोहाटी वालों का आटा 5।।= दाल 5= घी १ तोला और नमक मिर्च का है।

त्रियुगी नारायण—५ मील। यहां बड़ी सड़क आ मिली है जो ऋषिकेश से सीधी केदारनाथ को गई है। यहां बाबा जी की धर्मशाला और क्षेत्र है। आगे के मार्ग का वर्णन पहिले कर चुके हैं।

कैलाश-मानसरोवर यात्रा

वास्तव में कैलाश भगवान शङ्कर का निवास स्थान है। इसका प्रत्यक्ष अनुभव तो उन्हीं को होता है जो कैलाश-मानसरोवर की यात्रा करते हैं। भारत के प्राचीन साहित्य और काव्य के ग्रन्थ इसकी महिमा के गान में ओत प्रोत हैं। परन्तु अस्वस्थ बुद्धि के कारण हमारी समझ में न्यूनता ही रहती है। भगवद्-भक्तों को तो विराट पुरुष दिगम्बर शङ्कर का साक्षात दर्शन वहां होता ही है परन्तु सर्व-साधारण को भी शङ्कर तत्व का प्रत्यक्ष अनुभव यहां आने से ही हो जाता है। अर्थात "शंकरोतीति शंकरः" अभय अर्थात "अशान्तस्य कुतः सुखम्" शान्ति जिसके पास नहीं है उसे सुख कहां ? इस शान्ति को प्राप्त करने का प्रथम सुअवसर बिना योग साधन के ही कैलाश की परिक्रमा मात्र से मिल जाता है। वर्तमान संसार के भीषण संघर्षमय भौतिक युग में कैलाश में परिपूर्ण शान्ति का निवास है।

सृष्टि, स्थिति, एवं प्रलय के द्योतक प्रणव यहाँ अमरनाद को प्रवाह रूप में सुनाई पड़ते हैं। उस अज, अद्वैत, अखण्ड शिव की ज्योति, शक्ति के ऊपर लगभग ३०० फीट की ऊँचाई से क्षितिज तक फैली हुई चार धवल हिमानी में दृष्टि गोचर होती है। यहां पहुंचने पर ज्ञान और कर्म की स्वतः एकता हो जाती है। कैलाश की भूमि में पवित्रता कैसे अखण्ड रूप से निवास

करती है, इसका वर्णन वाणी अथवा लेखनी से नहीं हो सकता। लोक जीवन की अपवित्रता तथा संसार अधोगति के मूल कारण भूत काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि का इस शान्ति सागर की गहराई में विलीनीकरण हो जाता है। उज्ज्वल हिमाच्छादित शिखरों से प्रवाहित शीतल वायु, नाना प्रकार की वनौषधियों की जो सुगन्धि फैलती है उसमें रोग और उनके कीटाणुओं का सर्वनाश हो जाता है। ये सुगन्ध भरे पवन मानव स्वास्थ्य के विकास में पूर्णतः योग प्रदान करते हैं। कुछ यात्रीगण बद्रिकाश्रम को कैलाश मानसरोवर से अधिक अलौकिक गुणों से सम्पन्न बताते हैं परन्तु बद्रिकाश्रम के यात्री लौटते समय पेचिश की बीमारी के शिकार हो जाते हैं, जिसमें वहां की अलौकिकता के भाव को अनायास ही एक गहरा धक्का लगता है। सत्य तो यह है कि बद्रिकाश्रम वास्तविक हिमालय से दक्षिण-मध्य पर्वत पर स्थित है। अतः कैलाश की सी आबहवा यहां की नहीं है। बद्रिकाश्रम की यात्रा में हिमालय का पूरा भ्रमण भी नहीं हो पाता। यहां के यात्रियों को अनभिज्ञता के कारण हिम तथा रेत मिला जल पीना पड़ता है और इन लोगों का संयम भी ठीक नहीं रहने पाता, अतः रुग्ण होना स्वाभाविक है। लेकिन कैलाश-मानसरोवर की यात्रा में हिमालय की पूरी परिक्रमा करनी पड़ती है तथा तिब्बत के १४००० फीट ऊँचे मैदान में १६—२० दिन तक भ्रमण करने का सुअवसर प्राप्त हो जाता है। इसीलिये यहां के यात्रियों के स्वास्थ्य में एक विशेष प्रकार

का तेज झलकता रहता है। तिब्बत प्रदेश के पशु, घोड़े, बकरी, याक (बैल) आदि भी इतने हृष्ट-पुष्ट होते हैं कि चार-चार मन भार आसानी से वहन कर सकते हैं।

अहमदाबाद के एक यात्री महोदय क्षय रोग से युक्त अपने पुत्र के साथ कैलाश यात्रा करने के पश्चात् अपने पुत्र को निरोग पाकर अत्यन्त हर्षित और विस्मित हुये। बाद में उन्होंने मुक्तकण्ठ से कैलाश यात्रा की महिमा गाई। पाठक-गण यात्री महोदय से इस सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर लेने के पश्चात् कैलाश की महिमा के सम्बन्ध में निश्चय ही अपने हृदय में कोई शंका न रख पायेंगे। जो चाहें (कैलाश क्षेत्र) नैनीताल (यू० पी०) से यात्री महोदय का पता प्राप्त कर सकते हैं। यह एक निर्विवाद सत्य है कि संसार में शान्ति पूर्ण स्वर्ग का प्रत्यक्ष दर्शन कैलाश में ही होता है।

हिमालय की दूसरी व तीसरी श्रेणियों पर तथा कैलाश के चारों ओर तिब्बत के मैदान में जंगल अथवा झाड़ियों का नाम मात्र भी नहीं। जहां-तहां हरे-भरे घास के मैदान दिखाई देते हैं। यहां पर सुगन्धि प्रदान करने वाले छोटे-छोटे वृक्ष जो डेढ़ फुट से ऊंचे नहीं हैं, पाये जाते हैं। शीत के कारण कोई भी वस्तु यहां पर सड़ने नहीं पाती। घास मल मल से भी अधिक मुलायम प्रतीत होती है। यात्री नंगे पैर ही भ्रमण कर सकते हैं तथा बिस्तर के न रहने पर भी सुख और शान्ति की नीं[illegible] सकते हैं। गुगुल, जलमासी, बज्रदन्ती, शिलाजी[illegible] अभ्रक, गोरोचन, भोजपत्र आदि जहां तहां पाये जाते हैं

साँप, बिच्छू, मक्खी, मच्छर, चींटी इत्यादि जन्तु यहाँ ढूढ़ने पर भी नहीं मिलते। यत्र-तत्र गर्म पानी के स्रोत बहते हुये दिखाई देते हैं। बड़े बड़े झरनों के स्वच्छ श्वेत जल बहते हुये दूध की धारा के समान दृष्टिगोचर होते हैं। सहस्रों ब्रह्मचारी गण यहाँ वेद ध्वनि करते हुये पाये जाते हैं। श्यामकर्ण घोड़े, जो संसार के किसी भी क्षेत्र में नहीं पाये जाते, तथा कस्तूरी मृग यहां प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। देव, यक्ष तथा गंधर्व योनियां यहाँ मुक्त बिहार करती हैं। हिमालय की तृतीय श्रेणी का गांव के उत्तरार्द्ध में मधुर एवं दिव्य संगीत सुनाई पड़ता है।

बड़े बड़े दीर्घायु महात्मा और लामा जहाँ तहाँ गुफाओं में तथा तिब्बत के मैदानों में पाये जाते हैं। इस भूमि के निवासी रामराज्य की प्रजा के समान चरित्रवान हैं। इसका प्रमाण इससे मिलता है कि यदि किसी यात्री की कोई वस्तु कहीं छूट जाय तो उसे कोई ले नहीं सकता, चाहे वह वस्तु वहीं पर नष्ट क्यों न हो जाय। यों तो तिब्बत में भी डाकू रहते ही हैं। पर वे चोरी नहीं करते। साथ ही वे सत्य वक्ता भी होते हैं। हां, खाद्यान्न के अभाव में वे डकैती करते ही हैं। तिब्बत के लोग एक जगह मकान बनाकर स्थायी रूप से नहीं रहते। वे सर्वदा अपनी सम्पत्ति को लिये हुये एक जगह से दूसरी जगह घूमा करते हैं। चूंकि [illegible]नकी सम्पत्ति भेड़, बकरियां तथा गाय बैल ही हैं वहीं ये अपने त[illegible] [illegible]च देते हैं। एक गरीब परिवार के पास भी कम से कम ५०० बक[illegible] ५० गाय, बैल, (याक) होते ही हैं। ये लोग

अधिकतर नमकीन चाय पीते हैं। तथा थोड़ा सत्तू खाते हैं। मांस भी इनका गौण आहार है। ये लोग बलिष्ठ और परिश्रमी होते हैं।

भारतवर्ष के चारों धामों में श्री बद्रिकाश्रम धाम की यात्रा सर्वश्रेष्ठ बताई गई है। जो इस धाम की यात्रा का सौभाग्य प्राप्त कर चुके हैं वे इसकी महिमा को अच्छी तरह जानते हैं परन्तु अनन्त रत्नों के उद्गम स्थान तथा संसार के मुकुटमणि पर्वतराज हिमालय का पूर्ण दर्शन केवल बद्री, केदार यात्रा से ही नहीं हो जाता। कैलाश यात्रा में हिमालय की तीनों श्रेणियों को लांघ कर जाना होता है। अतएव हिमालय के पूर्ण वैभव, पूर्ण दर्शन का लाभ कैलाश यात्रा से ही होता है

पश्चिमी तिब्बत हिमालय एवं गान्धाना पर्वत से वृत्ताकार घिरा हुआ है। जिसकी परिधि लगभग एक हजार मील होगी। यह एक बृहदाकार सागर सा प्रतीत होता है। आज से पांच हजार वर्ष पूर्व यह क्षेत्र जलमग्न था तथा बिन्दु सरोवर व मानसरोवर के नाम से प्रसिद्ध था यहीं से गंगा यमुना आदि नदियों का उद्गम हुआ है। इस सरोवर के मध्य ही कैलाश पर्वत की स्थिति थी जो हिमाच्छादित होने के कारण दूर से रजतमय दिखाई देता है। परन्तु सतलज (शतद्रु), करनाली, ब्रह्मपुत्रा आदि नदियां पर्वतों को बराबर काटती रही। इसके फलस्वरूप इस सरोवर का अधिक भाग पठार (Plateau) में परिणित हो गया और जलयुक्त केवल कैलाश पर्वत के दक्षिण में ही सरोवर का

बचा जो मानसरोवर कहा जाता है। इस सरोवर के घट जाने से ही यह सम्भव हो सका है कि आज साधारण जन भी कैलाश यात्रा कर रहे हैं। पहले यह स्थान केवल सिद्धों, यक्षों एवं महात्माओं के लिये ही गम्य था। इन सारी बातों का प्रत्यक्ष अनुभव कैलाश यात्रा करते समय ही होता है। यात्रा करने वाले कुछ वैज्ञानिकों ने भी इस बात को सत्य माना है कि आज से पांच हजार वर्ष पूर्व यह मैदान सरोवर के रूप में रहा होगा। स्वामी जी ने अपने ग्यारह साल की यात्रा के अनुभव एवं बालमीकी रामायण के अवलोकन से इस बात को यथार्थतः सत्य बताया।

कैलाश के आस पास खिड़लंग, तीर्थापुरी, खोचरनाथ आदि बहुत से तीर्थ स्थान हैं। मानसरोवर की शोभा अकथनीय है। इस सरोवर में चारों ओर नौ मन्दिर हैं जिनमें लामा तथा भारत के महात्मागण निरन्तर उमा महेश के ध्यान में मग्न रहते हैं। स्वेन हेडन अन्वेषण के सुधारक श्री स्वामी प्रणवानन्द जी यहीं पर ठोकर गुपा नामक स्थान पर लगभग बीस वर्षों से निवास कर रहे हैं। राजहंस इसी मानसरोवर में देखने को मिलते हैं।

श्री स्वामी जी भी दीर्घकाल तक यहां केवल दुग्ध आहार करते हुए रह चुके हैं। नित्य प्रति एक विशाल काय कौवा जो ...ग कौवों से चौगुना बड़ा रहा होगा, मानसरोवर की परिक्रमा कर... ने स्वामी जी को दृष्टिगोचर होता था। स्वामी जी

के विचार से यही काक भुशंड जी प्रतीत होता है। ऐसी पवित्र एवं स्वास्थ्यप्रद यात्रा को न करना मानव जीवन के वास्तविक सुख से वञ्चित रहना है। डाक्टर रटले आदि विदेशी जन हिमालय के सर्वोच्च शिखर गौरीशंकर पर्वत की गत चढ़ाई में तीन अलौकिक पुरुषों का प्रकट होकर मार्ग दिखाना और फिर अदृश्य हो जाना, बीस हज़ार फ़ीट की ऊंचाई पर प्राणवायु (आक्सिजन) का अपने शरीर से पर्याप्त रूप में प्रकट होना आदि घटनाओं ने संसार को आश्चर्य चकित कर दिया है। कितने लोग इन पर्वतों की चढ़ाई में अपने प्राणों की आहुति चढ़ा चुके हैं। कुछ अनभिज्ञ जन इस प्रकार की यात्रा को केवल बनों और पर्वतों पर निरर्थक भटकना ही समझते हैं। पर यदि वे इस प्रकार के अन्वेषणों का जो विज्ञान एवं अध्यात्म से परिपूर्ण हैं, अध्ययन करें अथवा स्वयं यात्रा करें तो उनका भ्रम दूर हो जायगा।

अतः भारतवासियों को चाहिये कि वे इन अन्वेषक आदर्श पुरुषों तथा महर्षियों के बताये हुये मार्ग का अनुसरण करें और तत्काल ही कैलाश यात्रा का दृढ़ निश्चय करें और इस प्रकार मानव शरीर ग्रहण करने का पूर्ण लाभ प्राप्त करें। साथ ही उन्हें श्री गीता सत्संगाश्रम, कैलाश क्षेत्र नैनीताल (यू० पी०) द्वारा हिमालय के यात्रियों के लिये किये जाने वाले धर्मशाला निर्माण आदि के आयोजन में सहयोग देकर, इस महान पुण्य-यज्ञ का भागी बनना चाहिये।

असली कैलाश

कैलाश शिखरं रम्ये, शंकरस्य शिवालये।
देवतास्तत्र मोदन्ते, हिमवद्गिरि संस्थिताः ॥

परमरम्य गिरबर कैलासू।
सदा जहां शिव उमानिवासू ॥

कैलाश के दिव्य शिखर में भगवान शंकर अनन्त सौन्दर्यवती उमा के साथ निरन्तर विहार कर रहे हैं। इसीसे हिमालय की पर्वत मालाएं अलौकिक ऐश्वय और विभूतियों से मण्डित हैं। भगवान के अनन्त, तेज शक्ति, सौन्दर्य और प्रेम का अमृत हिमालय की प्रत्येक चूड़ा से निर्भर की तरह बह रहा है और उसकी दिगंतव्यापी श्रेणियों और सोपानों में फैल गया है। इसी से इस पुण्य भूमि में देव और देवियां क्रीडा किया करते हैं। साक्षात् श्री चन्द्रमौलि भगवान दिगम्बर का दर्शन और स्पर्श यहाँ सर्वत्र विद्यमान है। भक्ति तप और हृदय के पूर्ण समर्पण के द्वारा ही मनुष्य उस दर्शन को पा सकता है। निरे चर्म चक्षुओं की जिज्ञासा लेकर कैलाश में भगवान शङ्कर को ढूंढने जाना व्यर्थ ही होगा। फिर भी कैलाश बद्री का तीर्थ यात्रा करने से अपने इष्ट देव के दिव्य तत्वों का स्पर्श तो प्राप्त होता ही है। हिमालय देवतात्मा है। यहां अभिप्राय स्वर्ग के देवों से नहीं है।

'अभयं सत्त्व संशुद्धिः' इत्यादि दैवी संपत्तियों से युक्त प्राणी को ही देवतात्मा कहा जा सकता है। उमा महेश्वर के दिव्य

तत्त्वों की उपलब्धि जहां लोक में विराजमान है, वे ही स्थान वर्तमान में काशी, रामेश्वर, पशुपति केदार इत्यादि नामों से प्रसिद्ध है। इन सारे तीर्थों में जो कुछ भी दिव्य तत्त्वों का आविर्भाव है। उन सब का स्रोत केवल कैलाश ही है। कैलाश शंकर भगवान का हृदय ही है। 'हृदि अयं' अर्थात् वे सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्व प्राणियों के सुहृद, साक्षात शङ्कर भगवान हृदयरूपी कैलाश में आत्मवत अगोचर रहते हुए सन्निविष्ट हैं। बोलना, सूँघना, सुनना, चलना, फिरना, इत्यादि सम्पूर्ण मानव चेष्टाओं का स्रोत है ब्रह्मानन्द, जो अनन्त प्रकाश, सौन्दर्य शक्ति शांति से ओत प्रोत है। वही आत्मा बनकर सूक्ष्म से सूक्ष्म अणु परमाणु के हृदय में जाज्वल्य विराजमान है। पर प्राणी अज्ञान के कारण उसे पहिचान नहीं पाते हैं। तब भी अनुसंधान अनुभूति तो सबको होती ही रहती है। ऐसे ही परम श्रेष्ठ देवाधिदेव, सर्व भूत प्राणियों के आत्मा के आत्मस्वरूप शङ्कर भगवान हृद रूपी कैलाश में सर्वदा विद्यमान हैं। ध्यान योग से हृदि गति को जानने वाला योगी ही इस रहस्य को यत्किञ्चित ज्ञात कर सकता है। स्थल, चाक्षुप ज्ञान को ही अन्तिम प्रमाण्य ज्ञान मानने वाले आजकल के भौतिक-वैज्ञानिक विद्वान कहा करते हैं कि जिस कैलाश में साक्षात् शरीर धारी शिवजी रहते हों वही सच्चा कैलाश हो सकता है, अन्य कैलाश मिथ्या है। यह मान्यता असान पूर्ण और भ्रांत है। जो सच्चे ज्ञानी हैं, यथार्थ पंडित हैं, वे तो 'तद्विज्ञाः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः'

सदा, सर्वदा, सर्वत्र ही आनन्द कन्द, सच्चिदानन्द-धन परमात्मा का दर्शन करते हैं। वे ऐसी असम्बद्ध बात कदापि नहीं कह सकते हैं।

आजकल तो प्रतिवर्ष बहु संख्या में यात्री लोग बद्रिकाश्रम की यात्रा करते हैं। इसको हमारे पूर्वज महर्षि मुनियों ने तथा जगद्गुरू शंकराचार्य आदि ने चलाया है। कोई कारण नहीं हो सकता कि ये आचार्य जनता को असत्य और भ्रांति की ओर ले जाते। यदि बद्रिकाश्रम साक्षात् नारायण का दर्शन नहीं होता है तो इसका अर्थ यह नहीं होता है कि बद्रिकाश्रम कपोल कल्पित धाम है। तीर्थ स्थानों में सच्चे योगियों को छोड़ कर सर्व साधारण जनों को अलभ्य साक्षात् दर्शन नहीं हो सकता। वह नितांत दुर्लभ है और दीर्घ कालीन कठिन योग साधना द्वारा ही लभ्य हो सकता है। 'भक्त्यात्वनन्यया लभ्याः ।। इति ।।

जो लोग यह सोचते हैं साक्षात् नर-नारायण का दर्शन धाम बद्रिकाश्रम अन्यत्र ही है, वे एक भारी भ्रम में पड़े हुये हैं। इस प्रकार का विचार रखने वाले स्थूल दृष्टि लोग इस सृष्टि में दूसरा कोई कैलाश या बद्रिकाश्रम हरगिज नहीं दिखा सकते। प्रचलित बद्रिकाश्रम और कैलाश जैसे लिङ्गाकार के शिखर दूसरे स्थान पर नहीं मिल सकते। यहां की अलौकिकता ही इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि यही स्थान सच्चा कैलाश और सच्चा बद्रिकाश्रम है। मनुष्यों को चाहिए कि ऐसी मिथ्या तर्कनाओं और भ्रांतियों में न पड़कर वह इन उत्तम तीर्थों का दर्शन करके जीवन का अलभ्य लाभ उठावें।

कैलाश के मार्ग

कैलाश के कई मार्ग हैं। जिनमें पूर्व से पश्चिम की ओर आने में नैपाल से संबन्धित हुमुला, जुमुला घाटियों, अल्मोड़ा (यू० पी०) से सम्बन्धित व्यास दारमा, जोहार घाटियों, गढ़वाल (यू० पी०) से सम्बन्धित होती, नीति और माना घाटियों के मार्ग अधिक प्रसिद्ध और निकटवर्ती हैं। इनके अतिरिक्त पंजाब को बिसेररामपुर और काश्मीर प्रान्त की लदाख घाटियों से भी कैलाश जाने के मार्ग हैं। परन्तु नैपाल, पंजाब तथा काश्मीर से संबन्धित मार्ग अधिक लम्बे है, अर्थात् हजारों मील दूर हैं। अल्मोड़ा और गढ़वाल से होकर जो मार्ग हैं, उन में से माना, दारमा, घाटियों के मार्ग अत्यन्त कष्टप्रद हैं नीति और जोहार घाटी से जाना न अधिक कष्टप्रद है न अधिक सुविधा जनक ही, होती और व्यास घाटी से यात्रा करना अति उत्तम है। परन्तु यात्री विशेषकर व्यास घाटी से आया जाया करते हैं। लेकिन व्यास घाटी से आने में कई एक तीर्थ स्थान छूट जाते हैं और यह उल्टी परिक्रमा भी है।

सन ४५ से आज तक 'गीता सत्सेवाश्रम' कैलाश (नैनीताल) की ओर से जो यात्राएं होती आई हैं उन से पाया गया है कि जोहार घाटी होते हुए यात्रा करके व्यास घाटी से लौटने में सीधा पड़ता है। जोहार घाटी में कई एक अत्यन्त सुन्दर कुंड नंदादेवी पर्वत, मीलभ ग्लेसियर आदि पड़ते हैं। व्यास घाटी

में ऐसे कोई भी सुन्दर दृश्य दिखाई नहीं पड़ते। सन १९५० में यात्रा की रूपरेखा बिल्कुल बदल दी जायगी। इसका कारण प्रान्तीय सरकार की ओर से गढ़वाल जिलों में जोशीमठ तक और अल्मोड़ा जिले में टन कपूर से पिठौरागढ़ तक मोटर सड़क का कार्यक्रम प्रारम्भ हो गया है। उन सब घाटियों में रहने वाले भोटिया अधिकांश में अशिक्षित होते हैं। जोहार घाटी के भोटिया लोग कुछ पढ़े लिखे तथा चतुर होते हैं। वैसे तो जोहार घाटी का रास्ता अन्य घाटियों की अपेक्षा बहुत ही कष्ट जनक था, जैसा कि श्री सत्यदेव परिव्राजक ने अपनी पुस्तक 'मेरी कैलाश यात्रा' में इसकी कठिन यात्रा का वर्णन भी किया है। परन्तु स्वामी जी के सदुपदेश से जोहारी व्यापारियों ने लगभग ३५ मील की अति दुर्गम सड़क को एक एक दो दो फलाङ्ग करके १० फीट की चौड़ाई में फैला कर बनवा दिया है। यह सड़क मुन्स्यारी से लेकर दून तक है। मुन्स्यारी में श्री स्वामी विद्यानन्द सरस्वती महाराज ने कई प्राइमरी स्कूलों और एक हाईस्कूल की स्थापना की है, जिसके फल स्वरूप जोहारी बालक अब शिक्षित हो रहे हैं। श्री गीता सत्संग, 'कैलाश क्षेत्र' नैनीताल (यू० पी०) की ओर से सन ५० से होती घाटी होकर जाने तथा व्यास घाटी से लौट कर पिठौरागढ़ तक आने का प्रबन्ध कर दिया गया है। जोशी मठ से लेकर कैलाश मानसरोवर होते हुए पिठौरागढ़ तक कुल ३३० मील की यात्रा है।

जोहार घाटी से कैलाश मानसरोवर होते हुए व्यास घाटी के रास्ते पिठौरागढ़ तक ४३० मील की यात्रा है। काठगोदाम से अल्मोड़ा होते हुए जोहार घाटी से कैलाश यात्रा करना नितांत अवांछनीय है। क्योंकि इस रास्ते १०० मील की पैदल यात्रा अधिक होती है। जोशी मठ तक सड़क बनाने का कार्य किया जा रहा है। अतः इस रास्ते से यात्रा करना सुविधा जनक है। श्री गीता सत्संग कैलाश क्षेत्र की ओर से यात्रियों को सुविधा पहुंचाने का प्रबंध भी इसी (जोशी मठ होते हुए) रास्ते पर रहेगा। श्री बाबा काली कमली वाला क्षेत्र का जोशी मठ तक पूरा प्रबंध है।

यात्रा का मार्ग और प्रोग्राम

ऋषिकेश से देवप्रयाग, रुद्रप्रयाग होते हुए चमोली तक मोटर रास्ता है। चमोली से जोशी मठ तक भी मोटर सड़क बन रही है। जोशी मठ में हम यात्री को अपने साथ लेते हैं। जोशी मठ से आगे का विवरण इस प्रकार है।

जोशीमठ से तपोवन ७ मील, तपोवन से माजरी १६ मील, माजरी से होती २० मील (बम्पा होते हुए) होती से शिवचिलम १६ मील, शिवचिलम से मानीथंगा होते हुए व्याजलिङ्ग २० मील व्यजलिङ्ग से खिमालिङ्ग २५ मील।

खिमालिंग से तीर्थापुरी १८ मील, तीर्थापुरी से शोलचाक १६ मील। शोलचाक से न्यान्द्री १० मील, न्यान्द्री से कैलाश परिक्रमा २० मील।

दुर्चिन मण्डी

कैलाश (दर्चिन) से मानसरोवर १६ मील, मानसरोवर से गौरीउडियार (गुसलगुम्पा होते हुए) ३० मील। गौरीउडियार से ताकलाकोट ३० मील, ताकलाकोट से खोजरनाथ (आना जाना) २० मील।

ताकलाकोट से गार्म्याङ्ग २२ मील, गार्म्याङ्ग से खेला ३८ मील। खेला से धारचूला १० मील, धारचूला से अस्कोट २५ मील। अस्कोट से पिठोरागढ़ २५ मील। पिठोरागढ़ से टनकपुर तक मोटर रास्ता है। टनकपुर ओ० टी० रेलवे का स्टेशन है।

यात्रियों को निम्नलिखित वस्तुयें अपने साथ अवश्य लानी चाहियें—

(१) सूखे फल (सब मिलाए हुए)·········५ से०, (२) खट्टा अचार या चाट·········तथा (३) सुपारी पूर्वी, दक्षिणी, इलायची सब मिलाकर स्वेच्छानुसार पसन्द की कुल जोड़ ३ से १० सेर तक।

(४) बिस्तर २० सेर। कम्बल ४, तकिया १, वाटर प्रूफ (बरसाती) १, त्रिपाल जो कि दरी के स्थान पर जमीन में बिछाने के काम में भी आवे ७, चादर २।

तिब्बत की यात्रा के लिये पहिनने के सब कपड़े ऊन के होने चाहियें। ट्रङ्क, सूटकेस तथा सूतका बिस्तर कभी भी इस यात्रा में नहीं लाना चाहिए। जो व्यक्ति खर्च कर सकते हैं,

अपनी अपनी व्यक्तिगत रुचि, आदत के मुताबिक अन्य वस्तु भी साथ ला सकते हैं। भोजन बनाने के लिए बर्तन भी लाना पड़ेगा।

(१) दन्तमंजन या पाउडर (२) वैसलीन पोमेड (३) टौर्च बल्ब तथा शैल अपने पास और भी होने चाहियें। (४) बालों का तेल, (५) स्नान करने तथा कपड़ा धोने के लिये साबुन, (६) एक चाकू, (७) चश्मा (गोगिल्स) (८) २ पौंड ड्राई (डिब्बे में बन्द) दूध। (९) आधे आधे पौंड मक्खन के डिब्बे। (१०) ऊन का मफलर तथा होज़। (११) मुलायम चमड़े के पूरे बूट तथा बूटों की तली में नाल व कील ठुका लेना चाहिए इससे यात्रा में बड़ी मदद मिलती है। यात्रियों को यह भी सलाह दी जाती है कि वे अपने साथ पूरे बूट के अतिरिक्त आधे (हाफ) बूट (जूता) भी लावें। (१२) अमृत धारा २ शीशी। (१३) एस्प-रीन की गोली दो दर्जन। यात्रियों के साथ एक दुकान चलेगी। दुकान में चावल, आटा, सूखी तरकारी, नमक, लकड़ी, घी, सरसों का तेल, चने का आटा, बेसन मोमबत्ती, (उजाला-करने को) आदि पदार्थ कीमत देने पर मिलेंगे। यथोचित औषधि आदि का प्रबन्ध क्षेत्र की ओर से होगा। आत्मरक्षा तथा अन्यान्य सुरक्षा के लिए तथा तिब्बतीय डाकुओं का भय दूर करने के लिये तिब्बतीय भूमि में क्षेत्र की ओर से थोड़े २ गार्ड भी रखने पड़ते हैं। यात्रीगण भी हो सकें तो बन्दूक जरूर साथ लानी चाहिये। जोशी

मठ से पिठौरागढ़ तक प्रति चार चार मेम्बरों के बैच को एक तम्बू, एक रसोइया तथा एक नौकर मिलेगा। यात्रियों में समान रूप से नौकर तथा रसोइयों के वेतन का खर्च बांटा जावेगा। यह खर्च प्रति व्यक्ति ३०) से लेकर ४०) तक पड़ेगा। रसोइया तथा नौकर के भोजन का खर्च पार्टी के खर्च में ही सम्मिलित होगा। यात्रियों के लिये हरिद्वार से टनकपूर तक, कैलाश यात्रा कर, वापिस आने तक का खर्च कम से कम ४००) रुपये से काफी हो जायगा। क्षेत्र अपने खर्चा से यात्रियों के साथ एक प्रधान मैनेजर भेजेगा। जोशी मठ से सब यात्री साथ चलेंगे। भिन्न भिन्न समय में जाने वाले अलग अलग समूह में यात्रीगण यात्रा नहीं कर सकते। इस साल (१९५०) से साधु सन्तों के भोजन का मुफ्त का इन्तजाम यात्रा में बन्द है।

———

सूचना

इस केदारनाथ बद्रीनाथ की यात्रा पुस्तक में हमने श्री १०८ बाबा काली कमली वाले की मार्फत जो धर्मशालायें, सदावर्त, प्याऊ उत्तराखण्ड में चल रहे हैं और जो जो दानी महानुभाव उनमें सहायता देते हैं उनके नाम और विवरण उन स्थानों पर दिया है। दफ्तर की गलती से किसी महानुभाव का नाम रह गया हो तो कृपा करके वो अपनी सूचना देवें।

इस क्षेत्र में दानियों के दान का पूरा सदुपयोग हो और यथार्थरूप से लोक सेवा हो इस बात पर कलकत्ता ट्रस्ट कमेटी बहुत अधिक ध्यान रखती है किन्तु जो महानुभाव किसी प्रकार की त्रुटि का अनुभव करें, क्योंकि प्रबन्ध बहुत बड़ा है और दूर देश का है इसलिये ऐसे महानुभावों के हम बहुत कृतज्ञ होंगे जो हमें हमारी त्रुटियों की सूचना देते रहेंगे ताकि भविष्य में ऐसी त्रुटियां न हों और पूरे तौर पर लोक सेवा होती रहे।

धर्मशाला और सदावर्तों की आवश्यकता

आप जानते ही हैं अब यातायात की अधिकता से नई-नई सड़कें और नये मार्ग बनते जा रहे हैं। ये मार्ग भी प्राचीन ऐतिहासिक महत्व से परिपूर्ण हैं। इसलिये हम नवीन स्थानों